वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 144 गुरुवार 12 नवम्बर 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

महिला सशक्तीकरण ही विकसित राजस्थान की मजबूत नींव : भजनलाल

हर महिला को आत्मनिर्भर बनाने के लिए डबल इंजन सरकार प्रतिबद्ध

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश में महिला सशक्तीकरण को राज्य के समग्र विकास का मूल आधार बताया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा किए गए अपने संदेश में मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य की 'डबल इंजन सरकार' महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन, सुरक्षा और सर्वांगीण उन्नति के लिए पूरी निष्ठा के साथ काम कर रही है। मुख्यमंत्री मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने महिला उत्थान को लेकर सरकार के विजन को रेखांकित करते हुए लिखाः महिलाओं का सशक्तीकरण ही विकसित राजस्थान की मजबूत नींव है। हमारा प्रयास है कि प्रदेश की हर महिला आत्मनिर्भर बने, आर्थिक रूप से सशक्त हो और अपने सपनों को साकार करे। इसी उद्देश्य के साथ प्रदेश की डबल इंजन सरकार महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए पूर्ण प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है।



महिला कल्याण की योजनाओं पर सरकार का फोकस

आर्थिक स्वावलंबन को प्राथमिकता : मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि राज्य सरकार का मुख्य ध्येय महिलाओं को केवल योजनाओं का लाभार्थी बनाना नहीं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सक्षम उद्यमी के रूप में स्थापित करना है। राज्य सरकार का मानना है कि जब तक प्रदेश की आधी आबादी सशक्त और साधन संपन्न नहीं होगी, तब तक 'विकसित राजस्थान' के संकल्प को पूर्णता से हासिल नहीं किया जा सकता।

जयपुर मेट्रो फेज-2 का काम शुरू

13,037.66 करोड़ की महत्वाकांक्षी परियोजना में अब एलिवेटेड ट्रैक के साथ शहर के नीचे सुरंग बनाने का काम आगे बढ़ा

अंडरग्राउंड निर्माण के लिए 921.63 करोड़ रुपए का ठेका तय

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर की सड़कों पर बढ़ते वाहनों के दबाव और लगातार फैलते शहर को सार्वजनिक परिवहन का नया विकल्प देने की तैयारी अब जमीन पर उतरने लगी है। करीब 15 साल से जिस मेट्रो विस्तार का इंतजार था, उसके दूसरे चरण में निर्माण की गतिविधियां तेज हो रही है। 13,037.66 करोड़ रुपए की इस महत्वाकांक्षी परियोजना में अब एलिवेटेड ट्रैक के साथ शहर के नीचे सुरंग बनाने का काम भी आगे बढ़ गया है। खास बात यह है कि अंडरग्राउंड निर्माण के लिए 921.63 करोड़ रुपए का ठेका तय हो चुका है। अनुमानित लागत से करीब 238.63 करोड़ रुपए कम में मिले इस काम को 36 महीने में पूरा करना होगा। टनल बोरिंग मशीन (टीबीएम) से जमीन के भीतर दोहरी सुरंग बनाई जाएगी। यह जयपुर में मेट्रो निर्माण की नई इंजीनियरिंग चुनौती होगी।

पैकेजों में आगे बढ़ेगा काम

परियोजना का काम तेजी से हो इसके लिए अगल अलग पैकेजों में बांटा गया है। पहले पैकेज में करीब 10.8 किलोमीटर एलिवेटेड कॉरिडोर और 10 स्टेशन बनाने का काम करीब 918 करोड़ रुपए में दिया गया है। दूसरे पैकेज में करीब 3.13 किलोमीटर भूमिगत निर्माण शामिल है। तीसरे पैकेज में भी एलिवेटेड निर्माण प्रस्तावित है। योजना है कि अलग-अलग हिस्सों में समानांतर काम कराकर परियोजना को समय पर पूरा किया जाए। इस पूरे प्रोजेक्ट का महत्व केवल मेट्रो का विस्तार नहीं, बल्कि शहर के परिवहन ढांचे को एक नेटवर्क के रूप में विकसित करना है। अभी जयपुर मेट्रो का परिचालन करीब 11.64 किलोमीटर के दायरे में है और औसतन 60 हजार यात्री प्रतिदिन इसका इस्तेमाल करते हैं। फेज-2 पूरा होने पर मेट्रो नेटवर्क की लंबाई करीब 41 किलोमीटर बढ़ेगी। इससे औद्योगिक क्षेत्रों, व्यावसायिक केंद्रों, चिकित्सा संस्थानों और आवासीय इलाकों के बीच आवागमन का नया विकल्प मिलेगा।



मेट्रो फेज-2 : एक नजर में

- 13,037.66 करोड़ रुपए परियोजना की लागत
- 41 किमी विस्तार
- 36 स्टेशन
- 34 एलिवेटेड स्टेशन
- 02 भूमिगत स्टेशन

एडीबी से मिलेगी 60 प्रतिशत राशि

परियोजना के लिए वित्तीय संसाधन जुटाना भी बड़ी चुनौती है। इसके लिए एशियन डवलपमेंट बैंक (एडीबी) से 60 प्रतिशत राशि ऋण के रूप में लेने की योजना है। शेष 40 प्रतिशत राशि केंद्र और राज्य सरकार बराबर-बराबर वहन करेंगे। यानी दोनों सरकारों की हिस्सेदारी 20-20 प्रतिशत होगी। मेट्रो के मौजूदा नेटवर्क को नए कॉरिडोर से जोड़ने के लिए इंटरचेंज और फीडर परिवहन व्यवस्था भी विकसित की जाएगी। इससे यात्रियों को एक ही नेटवर्क में सफर की सुविधा मिलेगी। अब सबसे बड़ी कसौटी निर्माण की गति, लागत पर नियंत्रण और तय समयसीमा में पूरे नेटवर्क को तैयार करने की होगी।

आचार्य सुनील सागर महाराज का स्वर्णिम अवतरण महोत्सव 2027 में मनाएगा जैन समाज

धावास में 1 जनवरी को गुरु पूजन और शांतिनाथ विधान, मई में प्रस्तावित है भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन परंपरा के राष्ट्र संत, भारत गौरव एवं चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य श्री 108 सुनील सागर महाराज का स्वर्णिम अवतरण महोत्सव वर्ष 2027 में देशभर में श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर वर्षभर अनेक धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। जयपुर के धावास स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में भी विशेष आयोजन होंगे। मंदिर में आचार्यश्री के ससंघ सान्निध्य में ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित करने की तैयारी है। आचार्य श्री सुनील सागर महाराज का जीवन बाल्यकाल से वैराग्य, दीक्षा, कठोर साधना, साहित्य सृजन और विशाल साधु संघ के मार्गदर्शन तक की प्रेरणादायी यात्रा है। बालक संदीप से आचार्य सुनील सागर बनने तक का सफर केवल नाम और पद का परिवर्तन नहीं, बल्कि आत्मकल्याण के मार्ग पर निरंतर पुरुषार्थ और साधना का उदाहरण है। उनका जीवन गुरु भक्ति, आत्मानुशासन, ज्ञान साधना और धर्म के प्रति अटूट निष्ठा को दर्शाता है।

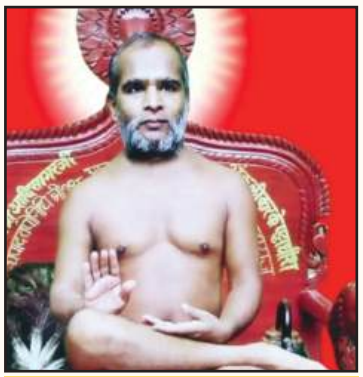
7 अक्टूबर 1977 को हुआ जन्म

आचार्य श्री 108 सुनील सागर महाराज का जन्म 7 अक्टूबर 1977 को मध्यप्रदेश के सागर संभाग के अंतर्गत तिगोड़ा (हीरापुर) गांव में हुआ। उनके पिता का नाम भागचंद जैन और माता का नाम मुन्नी देवी जैन है। बाल्यकाल में उनका नाम संदीप कुमार जैन था। प्रारंभ से ही धार्मिक संस्कारों, अध्ययन और आध्यात्मिक चिंतन के प्रति उनकी विशेष रुचि रही। उनकी प्रारंभिक शिक्षा किशुनगंज (दमोह) में हुई। उच्च शिक्षा के लिए वे सागर पहुंचे, जहां श्री गणेश दिगंबर जैन संस्कृत महाविद्यालय में अध्ययन किया। यहां उन्हें जैन दर्शन, आगम साहित्य, संस्कृत, प्राकृत और भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का गहन अध्ययन करने का अवसर मिला। उन्होंने शास्त्री के साथ बी.कॉम की शिक्षा भी प्राप्त की। युवावस्था में जहां सामान्य तौर पर व्यक्ति रोजगार, परिवार और सांसारिक उपलब्धियों की ओर बढ़ता है, वहीं संदीप कुमार के मन में जीवन के वास्तविक उद्देश्य को जानने की जिज्ञासा प्रबल होती गई। अध्ययन, सत्संगति और धार्मिक वातावरण से उनके भीतर वैराग्य की भावना मजबूत हुई। अंततः उन्होंने सांसारिक जीवन का त्याग कर संयम और साधना का कठिन मार्ग चुनने का निर्णय लिया। 20 अप्रैल 1997 को महावीर जयंती के पावन अवसर पर उत्तर प्रदेश के बरुआसागर (झांसी) में विशाल जनसमूह की उपस्थिति में आचार्य श्री 108 सन्मति सागर महाराज के करकमलों से उन्हें जैनेश्वरी मुनि दीक्षा प्रदान की गई। इसके साथ ही संदीप कुमार जैन का सांसारिक परिचय पीछे छूट गया और वे मुनि सुनील सागर महाराज के रूप में धर्म साधना के पथ पर अग्रसर हुए। दिगंबर मुनि जीवन केवल सांसारिक सुविधाओं और वस्तुओं का त्याग नहीं, बल्कि इच्छाओं, आसक्तियों और कषायों पर विजय प्राप्त करने का कठिन अभ्यास है। अहिंसा, अपरिग्रह, आत्मसंयम और निरंतर स्वाध्याय इस जीवन के मूल आधार हैं। दीक्षा के बाद मुनि सुनील सागर महाराज ने गुरु के सान्निध्य में साधना, अध्ययन और संघ की मर्यादाओं को आत्मसात किया। उनकी विनम्रता, मृदुभाषिता, अनुशासन और ज्ञान के प्रति जिज्ञासा ने उन्हें एक समर्पित शिष्य के रूप में स्थापित किया।



गुरु परंपरा के चतुर्थ पट्टाधीश बने

आचार्य श्री सुनील सागर महाराज का आध्यात्मिक व्यक्तित्व आचार्य श्री 108 आदिसागर महाराज (अंकलीकर) की गुरु परंपरा से जुड़ा है। वे इस परंपरा के चतुर्थ पट्टाधीश हैं। इस परंपरा में तप, त्याग, शास्त्रज्ञान और अनुशासन को विशेष महत्व दिया गया है। इस गुरु परंपरा की प्रमुख कड़ियों में प्रथम आचार्य आदिसागर महाराज, द्वितीय पट्टाधीश आचार्य महावीर कीर्ति महाराज और तृतीय पट्टाधीश तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मति सागर महाराज शामिल हैं। आचार्य सन्मति सागर महाराज के सान्निध्य में मुनि सुनील सागर महाराज की साधना और आध्यात्मिक व्यक्तित्व विकसित हुआ। 25 जनवरी 2007 को औरंगाबाद में आचार्य सन्मति सागर महाराज ने अपने जन्मदिवस के अवसर पर मुनि सुनील सागर महाराज को आचार्य पद के लिए संस्कारित किया। इसके बाद उन्हें स्वतंत्र संघ के साथ विहार कर व्यापक स्तर पर धर्म प्रभावना करने की आज्ञा दी गई। उन्होंने महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों सहित दक्षिण भारत में विहार कर धर्म का संदेश जन-जन तक पहुंचाया। 26 दिसंबर 2010 को आचार्य सन्मति सागर महाराज की आज्ञा और लिखित आदेश के अनुसार मुनि सुनील सागर महाराज को इस परंपरा का चतुर्थ पट्टाधीश घोषित किया गया। इसके साथ ही उनके कंधों पर गुरु परंपरा की विरासत को आगे बढ़ाने और विशाल साधु संघ का मार्गदर्शन का दायित्व आया।



युवावस्था में जहां सामान्य तौर पर व्यक्ति रोजगार, परिवार और सांसारिक उपलब्धियों की ओर बढ़ता है, वहीं संदीप कुमार के मन में जीवन के वास्तविक उद्देश्य को जानने की जिज्ञासा प्रबल होती गई।

प्राकृत साहित्य के संरक्षण और संवर्धन में योगदान

आचार्य श्री सुनील सागर महाराज का व्यक्तित्व केवल तपस्वी संत तक सीमित नहीं है। वे अध्येता, चिंतक और साहित्यकार के रूप में भी विशिष्ट पहचान रखते हैं। प्राचीन जैन साहित्य और प्राकृत भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन में उनका महत्वपूर्ण योगदान बताया जाता है। वर्ष 2003 से 2015 के बीच उनके द्वारा रचित 10 प्राकृत ग्रंथों का प्रतिनिधि संग्रह भारतीय ज्ञानपीठ से 'सुनील प्राकृत समग्र' नाम से प्रकाशित हुआ। इसका संपादन प्रो. डॉ. उदयचंद जैन, प्रो. डॉ. दामोदर शास्त्री और डॉ. महेंद्रकुमार जैन 'मनुज' ने किया। इस संग्रह में धर्म, नीति, अध्यात्म, ध्यान, भावना, आत्मचिंतन और तीर्थंकरों की स्तुतियों जैसे विषयों को प्राकृत भाषा में प्रस्तुत किया गया है। उनकी प्रमुख रचनाओं में णियदी संगहो (नीति संग्रह), भावणासारो (भावनासार), अज्झप्पसारो (अध्यात्मसार) और सम्मदि-सदी शामिल हैं। इन रचनाओं में अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, आत्मचिंतन, वैराग्य और गुरु के प्रति श्रद्धा जैसे विषयों को स्थान दिया गया है। सम्मदि-सदी में उन्होंने अपने दीक्षा गुरु आचार्य सन्मति सागर महाराज के गुणों और व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है। @... पेज 3 पर

विशाल साधु संघ का मार्गदर्शन...

चतुर्थ पट्टाधीश के रूप में दायित्व संभालने के बाद आचार्य श्री सुनील सागर महाराज ने गुरु परंपरा की मयार्दा बनाए रखने और साधु संघ को एक सूत्र में जोड़ने का कार्य किया। उनके प्रकाशित जीवन परिचय के अनुसार, उनके मार्गदर्शन में 200 से अधिक पिच्छीधारी साधु, 12 आचार्य, 3 उपाध्याय और 5 गणिनी आर्यिकाएं साधना में संलग्न हैं। उनके व्यक्तित्व में अनुशासन, विनम्रता और गुरु-शिष्य परंपरा के प्रति समर्पण को विशेष स्थान प्राप्त है। उनके विचारों में संघ की एकता और मयार्दा का आधार आपसी विश्वास, गुरु के प्रति श्रद्धा और नियमों का पालन है। वे अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांतवाद, संयम और आत्मशुद्धि जैसे जैन दर्शन के मूल सिद्धांतों को जीवन के व्यवहार में अपनाने की प्रेरणा देते हैं।

2027 में होंगे विशेष धार्मिक आयोजन

श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन समाज समिति, धावास के परम संरक्षक गजेंद्र कुमार जैन ने बताया कि वर्ष 2027 में आयोजित होने वाला स्वर्णिम अवतरण महोत्सव आचार्य श्री सुनील सागर महाराज के जीवन, साधना और आध्यात्मिक योगदान को समाज के सामने प्रस्तुत करने का विशेष अवसर है। ऐसे आयोजनों से नई पीढ़ी को जैन धर्म की शिक्षाओं, गुरु परंपरा और मुनि जीवन के महत्व को समझने का अवसर मिलेगा। धावास मंदिर के संरक्षक एवं निर्माण संयोजक जय कुमार जैन बड़जात्या ने बताया कि स्वर्णिम अवतरण महोत्सव के अवसर पर 1 जनवरी 2027 को श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, धावास में गुरु पूजन और शांतिनाथ विधान मंडल पूजन का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसके बाद 2 से 10 जनवरी तक तीर्थाधिराज सम्मेद शिखर सहित पंच तीर्थ वंदना



का आयोजन होगा। इस आयोजन में जिनभक्त मयंक-रिनी पाटनी परिवार और मायरा फैशन्स की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। मंदिर समिति के अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार बैद एवं मंत्री मितेश ठोलिया ने बताया कि आचार्य श्री सुनील सागर महाराज का स्वर्णिम अवतरण महोत्सव देशभर में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के साथ श्रद्धा और भक्ति से मनाया जाएगा।

मई में प्रस्तावित है पंचकल्याणक महोत्सव

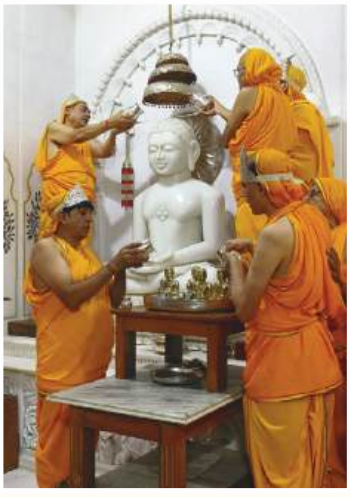
मंदिर समिति के कोषाध्यक्ष हेमेंद्र लुहाड़िया ने बताया कि इसी श्रृंखला में मई 2027 में धावास स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन



मंदिर का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित किए जाने की संभावना है। धावास में चार मंजिला शांतिनाथ जिनालय का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। निर्माण समिति के संयोजक जय कुमार जैन बड़जात्या और सदस्य नरेश सौगाणी ने बताया कि मंदिर निर्माण में आर.के. मार्बल ग्रुप, ए.आर.एल. ग्रुप, सौगाणी ज्वैलर्स ग्रुप, एकता एंटरप्राइजेज ग्रुप, चांदवाड़ ग्रुप और पापड़ीवाल ग्रुप सहित कई संस्थाओं का सहयोग मिल रहा है। श्री सन्मति सुनीलम् महिला मंडल, धावास की अध्यक्ष सरिता लुहाड़िया और मंत्री सीमा बड़जात्या ने बताया कि धावास का यह जिनालय राजस्थान का ऐसा पहला मंदिर होगा, जहां आचार्य श्री सुनील सागर महाराज के ससंघ मंगल सान्निध्य में नवीन प्रतिमाओं का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित किया जाएगा। इसके साथ ही प्राचीन जिनालयों और चैत्यालयों के संरक्षण का कार्य भी किया जाएगा।

हावड़ा में भक्तिभाव से मनाया भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव





पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में श्रद्धालुओं ने चढ़ाया निर्वाण लाडू, अभिषेक और शांतिधारा के बाद किया पूजन

हावड़ा (कोलकाता). शाबाश इंडिया

कार्तिक कृष्ण अमावस्या के पावन अवसर पर सोमवार को हावड़ा के डबसन स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में जैन धर्म के वर्तमान चौबीसी के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक महोत्सव भक्तिभाव और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने भगवान का अभिषेक, शांतिधारा और पूजन कर निर्वाण लाडू समर्पित किया। सुबह से ही मंदिर में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। बड़ी संख्या में समाज के लोगों ने धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लिया और भगवान महावीर के चरणों में श्रद्धा अर्पित की।

भगवान महावीर के निर्वाण दिवस का धार्मिक महत्व

जैन मान्यता के अनुसार, भगवान महावीर स्वामी कार्तिक कृष्ण अमावस्या की प्रत्यूष बेला में बिहार के पावापुरी स्थित जल मंदिर के पद्म सरोवर से 26 मुनियों के साथ मोक्ष को प्राप्त हुए थे। इसी पावन दिन संध्या बेला में भगवान महावीर के प्रमुख गणधर गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। जैन समाज में इस दिन से नववर्ष का शुभारंभ भी माना जाता है। महोत्सव के अवसर पर सुभाष पांड्या, डूंगरमल गंगवाल, सुरेश गंगवाल, प्रकाश पहाड़िया, भागचंद गंगवाल, पंकज बगड़ा, राजेश बगड़ा, भागचंद बड़जात्या, भानुप्रकाश काशलीवाल, सुरेंद्र जैन, विनीत जैन, बसंत सेठी, विनोद गंगवाल, अविनाश लुहाड़िया, नितेश जैन, नीरज जैन, राजेश अजमेरा, अमित जैन सहित समाज के अनेक साधर्मी बंधु उपस्थित रहे।

राजनीति

हर साल 'दमघोंटू' दिल्ली

देश की राजधानी दिल्ली और आसपास के शहरों के लिए वायु प्रदूषण अब हर साल की समस्या बन चुका है। अक्टूबर से फरवरी के मध्य तक दिल्ली की हवा दमघोंटू हो जाती है। अदालतें कई बार इसे ''गैस चैंबर'' तक बता चुकी हैं। प्रदूषण खतरनाक से बढ़कर जानलेवा स्तर तक पहुंच जाता है और सरकार को ग्रैप-3 जैसी पाबंदियां लागू करनी पड़ती हैं। निर्माण कार्य बंद कर दिए जाते हैं, लेकिन इसका सबसे अधिक खामियाजा दिहाड़ी मजदूरों को भुगतना पड़ता है। उनके लिए रोज काम करना और उसी से परिवार का पेट पालना मजबूरी है। सरकारी और निजी कार्यालयों को भी कर्मचारियों के लिए घर से काम करने की सलाह दी जाती है। सवाल है कि क्या इन अस्थायी पाबंदियों से प्रदूषण की समस्या का स्थायी समाधान संभव है? सर्वोच्च न्यायालय भी कई बार स्पष्ट कर चुका है कि केवल प्रतिबंध लगाने से प्रदूषण समाप्त नहीं होगा। दिल्ली-एनसीआर में 3 करोड़ से अधिक निजी वाहनों की मौजूदगी प्रदूषण की बड़ी वजह है। इसके अलावा निर्माण कार्य, औद्योगिक गतिविधियां और कचरा जलाने से भी हवा जहरीली होती है। दीपावली पर पटाखों के इस्तेमाल ने स्थिति को और गंभीर बना दिया। शीर्ष अदालत के निर्देशों के बावजूद आतिशबाजी जारी रही। दीपावली की रात 10 बजे दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक 376 दर्ज किया गया, जबकि सामान्य स्तर 100 तक माना जाता है। अगले दिन सुबह कई इलाकों में यह 400 के पार पहुंच गया। 15 से अधिक इलाकों में प्रदूषण का स्तर गंभीर श्रेणी में दर्ज हुआ, जबकि 35 इलाकों में यह 300 से 400 के बीच रहा। प्रदूषण का असर केवल दिल्ली तक सीमित नहीं है। वर्ष 2025 के एक अध्ययन के अनुसार, देश में वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों का आंकड़ा बेहद चिंताजनक है। इस अध्ययन में हर सेकंड एक मौत और प्रतिदिन 5,500 से अधिक मौतों का अनुमान जताया गया है। देश के 66 शहरों का विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में शामिल होना भी गंभीर चिंता का विषय है। यहां तक कि स्वच्छता के लिए पहचाने जाने वाले इंदौर में भी दीपावली के दौरान वायु गुणवत्ता सूचकांक में असामान्य वृद्धि की खबरें सामने आईं। प्रदूषण के लिए अक्सर पंजाब और हरियाणा में पराली जलाने को जिम्मेदार ठहराया जाता है। हालांकि, विभिन्न आकलनों में वाहनों, निर्माण कार्यों, कारखानों और अन्य स्रोतों से होने वाले प्रदूषण की हिस्सेदारी भी महत्वपूर्ण बताई गई है।

संपादकीय

उर्वरक सब्सिडी में सेंध रोकने की दिशा में डिजिटल पहल

उर्वरक सब्सिडी का बोझ लगातार बढ़ने की आशंकाओं के बीच वर्ष 2026 के खरीफ सीजन में चुनिंदा सीमावर्ती जिलों में उर्वरकों की बिक्री में दर्ज 37.56 प्रतिशत की गिरावट राहत देने वाला संकेत है। यह गिरावट उर्वरक खरीद के लिए डिजिटल सत्यापन व्यवस्था लागू किए जाने के बाद सामने आई है। इसके तहत एग्रीस्टैक और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से उर्वरक खरीद को किसानों की पहचान, भूमि रिकॉर्ड और फसल की जरूरतों से जोड़ा गया है।



सब्सिडी वाले यूरिया का औद्योगिक उपयोग और सीमा पार तस्करी लंबे समय से चिंता का विषय रहे हैं। ऐसे में बिक्री में आई गिरावट सब्सिडी के दुरुपयोग और रिसाव की समस्या की गंभीरता का संकेत देती है। इसका प्रमुख कारण भारत और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में यूरिया की कीमतों का भारी अंतर है। भारत में किसानों को 45 किलोग्राम यूरिया का बैग लगभग 265 रुपये में मिलता है, जबकि सितंबर में इसकी आयात सहित अनुमानित लागत 1,674 रुपये थी। इस अंतर का सीधा असर सरकारी खजाने पर पड़ता है। वित्त वर्ष 2026-27 में उर्वरक सब्सिडी के लिए लगभग 1.71 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। वहीं, वित्त वर्ष 2025-26 में इस मद पर खर्च बढ़कर अनुमानित 2.11 लाख करोड़ रुपये पहुंच गया, जो 1.68 लाख करोड़ रुपये के बजट अनुमान से 26 प्रतिशत और 1.86 लाख करोड़ रुपये के संशोधित अनुमान से 13.4 प्रतिशत अधिक है। केंद्र सरकार की डिजिटल उर्वरक बिक्री व्यवस्था इस दिशा में स्वागतयोग्य कदम है। इसके तहत खरीद से पहले किसान की डिजिटल पहचान और सत्यापित भूमि रिकॉर्ड को फसल की जरूरतों से जोड़ा जाता है। मौजूदा एकीकृत उर्वरक प्रबंधन प्रणाली के साथ मिलकर यह व्यवस्था असामान्य खरीद पैटर्न की पहचान, जिला स्तर पर खपत की निगरानी और सब्सिडी वितरण को अधिक पारदर्शी बनाने में मदद कर सकती है। पायलट परियोजना वाले जिलों में बिक्री में आई गिरावट बताती है कि इसके लाभ सीमावर्ती क्षेत्रों तक सीमित नहीं रहने चाहिए। हालांकि, इस गिरावट का आकलन करते समय फसल चक्र में बदलाव और कम बारिश जैसे कारकों को भी ध्यान में रखना जरूरी है। साथ ही यह सुनिश्चित करना होगा कि डिजिटल सत्यापन के कारण वास्तविक किसान उर्वरक से वंचित न हों। पट्टे पर खेती करने वाले किसान, बटाईदार और विवादित या अधूरे भूमि रिकॉर्ड वाली जमीन पर खेती करने वालों के सामने पात्रता साबित करने की चुनौती हो सकती है। जमीन का मालिक और उस पर खेती करने वाला व्यक्ति हमेशा एक ही नहीं होता। इसलिए उर्वरक की उपलब्धता को भूमि रिकॉर्ड से अत्यधिक जोड़ना व्यवस्था को असमावेशी बना सकता है। सब्सिडी सही व्यक्ति तक पहुंचनी चाहिए, लेकिन इसके लिए किसानों को जरूरी कृषि इनपुट से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। एक और महत्वपूर्ण पहलू उर्वरक सब्सिडी की मौजूदा संरचना है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

मरीजों को बड़ी राहत

सौरभ वार्ष्णेय

कैंसर का नाम सुनते ही किसी भी परिवार के सामने जिंदगी और मौत का सवाल खड़ा हो जाता है। यह बीमारी न केवल मरीज को शारीरिक और मानसिक रूप से तोड़ती है, बल्कि पूरे परिवार की आर्थिक स्थिति भी डगमगा देती है। इलाज की लंबी प्रक्रिया, महंगी जांच, अस्पतालों का खर्च और जीवनरक्षक दवाओं की ऊंची कीमतें पहले से परेशान परिवारों के लिए बड़ी चुनौती होती हैं। ऐसे में कैंसर की 137 दवाओं की कीमतों में भारी कटौती लाखों मरीजों और उनके परिजनों के लिए राहत भरी खबर है। हालांकि, यह फैसला दवा कारोबार में मुनाफे और मूल्य निर्धारण की व्यवस्था पर गंभीर सवाल भी खड़े करता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, 121 दवाओं के 1,364 फॉर्मूलेशन की नई कीमतें जारी की गई हैं। इनमें 679 ब्रांड की दवाओं के दाम 50 प्रतिशत से अधिक घटाए गए हैं। कुछ दवाओं की कीमतों में 96.45 प्रतिशत तक की कमी हुई है। अनुमान है कि इससे मरीजों को सालाना करीब 3,540.38 करोड़ रुपए की बचत होगी। यह आंकड़ा बताता है कि कैंसर के इलाज का आर्थिक बोझ कितना बड़ा रहा है। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। 22 सितंबर को सुनवाई के दौरान शीर्ष अदालत ने कैंसर की दवाओं की खुदरा कीमत और अधिकतम खुदरा मूल्य के बीच भारी अंतर पर सवाल उठाए थे। अदालत ने 2,700 रुपए की दवा मरीज को 27,000 रुपए में मिलने की स्थिति पर कड़ी नाराजगी जताई थी। न्यायालय की चिंता केवल कीमतों तक सीमित नहीं थी, बल्कि उस व्यवस्था को लेकर भी थी, जिसमें गंभीर बीमारी से जूझ रहे मरीजों की मजबूरी कारोबार और मुनाफे का माध्यम बन सकती है। इसके बाद 17 अक्टूबर को राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण ने 137 गैर-अनुसूचित कैंसर दवाओं पर व्यापारिक मार्जिन 30 प्रतिशत निर्धारित किया। इसका उद्देश्य दवाओं की कीमतों और व्यापारिक मुनाफे को तर्कसंगत बनाना था। सबसे बड़ा सवाल यह है कि जीवन बचाने वाली दवाओं पर इतना अधिक मुनाफा कैसे संभव हुआ? दवा कंपनियों को अनुसंधान, उत्पादन, गुणवत्ता नियंत्रण और वितरण पर खर्च करना पड़ता है। लेकिन इन खर्चों के नाम पर ऐसी कीमतें वसूलना, जिन्हें आम आदमी वहन न कर सके, उचित नहीं है। दवा कोई सामान्य उपभोक्ता वस्तु नहीं, बल्कि किसी व्यक्ति के जीवन और परिवार की उम्मीद से जुड़ी आवश्यकता है। भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच आज भी आर्थिक स्थिति से प्रभावित होती है। संपन्न परिवार महंगे उपचार का खर्च उठा सकते हैं, लेकिन गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों के सामने इलाज जारी रखने या अपनी आर्थिक स्थिति बचाने का कठिन विकल्प होता है। कई परिवार जमीन और मकान तक बेच देते हैं, जबकि कुछ कर्ज में डूब जाते हैं। ऐसे में दवाओं की कीमतों पर नियंत्रण केवल आर्थिक नीति नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय का विषय है। हालांकि, कीमतें घटाना ही पर्याप्त नहीं होगा। सरकार को सुनिश्चित करना चाहिए कि इसका वास्तविक लाभ मरीजों तक पहुंचे। दवा दुकानों, अस्पतालों और वितरकों की नियमित निगरानी हो तथा निर्धारित कीमत से अधिक वसूली पर कार्रवाई की जाए। साथ ही दवाओं की उपलब्धता और आपूर्ति भी प्रभावित नहीं होनी चाहिए। कैंसर के उपचार में नई दवाओं और तकनीकों का लगातार विकास हो रहा है। इसलिए मूल्य नियंत्रण की व्यवस्था को समय-समय पर अद्यतन करना जरूरी है।

भगवान महावीर का 2553वां निर्वाणोत्सव मनाया, 24 किलो का निर्वाण लाडू चढ़ाया

मानसरोवर के वरुण पथ स्थित दिगंबर जैन मंदिर में गणिनी आर्यिका विभाश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में हुए धार्मिक आयोजन





जयपुर. शाबाश इंडिया। मानसरोवर के वरुण पथ स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में रविवार को गणिनी आर्यिका श्री विभाश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में भगवान महावीर स्वामी का 2553वां निर्वाणोत्सव श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सहस्त्रनाम अभिषेक, शांतिधारा और भगवान महावीर की पूजा-अर्चना की गई। निर्वाण कांड के मंत्रों के उच्चारण के साथ भगवान महावीर को 24 किलो का निर्वाण लाडू अर्पित किया गया।

भगवान बनने का मार्ग बताते हैं तीर्थंकर

धर्मसभा में आर्यिका श्री विभाश्री माताजी ने कहा कि भगवान केवल भक्त नहीं बनाते, बल्कि भगवान बनने का मार्ग भी बताते हैं। तीर्थंकरों की देशना मनुष्य को निर्वाण अर्थात मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। समिति अध्यक्ष जे.के. जैन एवं मंत्री ज्ञान बिलाला ने बताया कि मुख्य शांतिधारा करने का सौभाग्य समाज के श्रेष्ठी अरुण पाटनी को प्राप्त हुआ, जबकि 24 किलो का निर्वाण लाडू चढ़ाने का पुण्यार्जन निर्मल सेठी परिवार ने किया।

आर्यिका संघ का चातुर्मास निष्ठापन संपन्न

समिति के संगठन मंत्री सुनील जैन गंगवाल ने बताया कि आर्यिका संघ का चातुर्मास निष्ठापन संपन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यिका श्री ने चातुर्मास कलश स्थापना के पुण्यार्जकों लीलादेवी, मुकेश एवं अंजू जैन (निर्माण नगर), श्यामा देवी, सुनील-सुनीता गोधा, पराग-राखी परिवार, मुकुट तथा हेमेन्द्र-कल्पना सेठी को कलश भेंट किए। गंगवाल ने बताया कि आगामी रविवार, 15 नवंबर 2026 को गायत्री सभा भवन परिसर में आर्यिका संघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह आयोजित किया जाएगा।

भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर नसिया जी में चढ़ाया निर्वाण लाडू

इंदौर के जबरी बाग स्थित पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में हुए धार्मिक आयोजन, पाठशाला के बच्चों ने बनाई रंगोली



इंदौर. शाबाश इंडिया। अहिंसा परमो धर्म, जियो और जीने दो, अनेकांतवाद, सत्य और अपरिग्रह का संदेश देने वाले भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण कल्याणक महोत्सव जबरी बाग स्थित श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर (नसिया जी) में भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए और श्रद्धालुओं ने भगवान को निर्वाण लाडू समर्पित किया। महोत्सव के दौरान गर्भगृह में विराजमान भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा पर दो शांतिधाराएं की गईं। वहीं, मंदिर परिसर में स्थित पांडुक शिला पर भगवान महावीर स्वामी और चंद्रप्रभु भगवान की प्रतिमाओं पर भी शांतिधारा की गई। इसके बाद श्रद्धालुओं ने विधि-विधान से पूजन कर निर्वाण लाडू चढ़ाया।

बच्चों ने बनाई आकर्षक रंगोली

महोत्सव के अवसर पर मंदिर प्रांगण में पाठशाला के बच्चों ने सुंदर रंगोली सजाई। मंदिर के मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ के दरबार में दीप प्रज्ज्वलित किए गए। पूरा मंदिर परिसर भक्तिमय वातावरण से सराबोर रहा। इस अवसर पर नसिया समाज के वरिष्ठ सदस्य धीरेन्द्र कासलीवाल, प्रकाशचंद्र शास्त्री, वीर कुमार जैन, महेंद्र कुमार जैन, राजेश जैन, विशाल जैन, उज्ज्वल जैन (काजू), सचिन जैन, दीपक जैन, राजीव जैन, अर्पित जैन, आलोक जैन, नरेंद्र कुमार जैन और सुधीर कुमार जैन (सरल) सहित बड़ी संख्या में समाजजन मौजूद रहे। यह जानकारी मंदिर के मीडिया प्रभारी हरिहर सिंह चौहान ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से दी।

महल योजना के जैन मंदिर में भक्तिभाव से मनाया भगवान महावीर का निर्वाण महामहोत्सव

अभिषेक, शांतिधारा और सामूहिक निर्वाण लाडू समर्पण के साथ हुए धार्मिक आयोजन, बाल पाठशाला के विद्यार्थियों ने प्रस्तुत की वंदना



जयपुर. शाबाश इंडिया। दीपावली के पावन अवसर पर जगतपुरा की महल योजना स्थित श्री 1008 मुनि सुव्रत दिगंबर जैन मंदिर में भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण महामहोत्सव हर्षोल्लास और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए गए, जिनमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। कार्यक्रम समन्वयक अभिषेक सांघी ने बताया कि सुबह अभिषेक और शांतिधारा के साथ धार्मिक कार्यक्रमों की शुरूआत हुई। इसके बाद बाल पाठशाला के विद्यार्थियों ने भक्तिभाव से भगवान महावीर स्वामी की वंदना प्रस्तुत की। उनकी प्रस्तुति ने उपस्थित श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। भगवान महावीर स्वामी के मोक्ष कल्याणक के उपलक्ष्य में निर्वाण कांड का पाठ किया गया। इसके बाद विधि-विधान से सामूहिक रूप से निर्वाण लाडू समर्पित किया गया। धार्मिक अनुष्ठानों के समापन पर भव्य महाआरती हुई। दीपों की रोशनी और आरती की गूंज से पूरा जिनालय भक्तिमय हो उठा। कार्यक्रम के दौरान मंदिर समिति की ओर से समाज और धर्म के हित में सराहनीय कार्य करने वाले पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का अभिनंदन किया गया। मंदिर अध्यक्ष निर्मला मुकेश सांघी और मंत्री शिव कुमार ने जीवदया कमेटी की अध्यक्ष मैना गंगवाल, ऋतु नवीन बड़जात्या तथा ''टीम पाठशाला'' की डॉ. प्रीति और मोना सहित सभी सक्रिय कार्यकर्ताओं का स्वागत किया।

भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव पर जैन बगीची में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

निर्वाण लाडू चढ़ाकर मनाई दीपावली। गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री संगममति माताजी ससंघ के सान्निध्य में हुए धार्मिक आयोजन, पद्म सरोवर की रचना कर किया भगवान का अभिषेक



अंबाह. शाबाश इंडिया। धर्मनगरी अंबाह में जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण महोत्सव सोमवार को श्रद्धा, भक्ति और धार्मिक उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर जैन बगीची परिसर में परम पूज्य गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री संगममति माताजी ससंघ के मंगल सान्निध्य में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। सुबह से ही जैन बगीची में श्रद्धालुओं के पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया। भगवान महावीर स्वामी के जयकारों से पूरा परिसर धर्ममय हो उठा। श्रद्धालुओं ने भगवान का अभिषेक, पूजन और आराधना कर निर्वाण लाडू अर्पित किया तथा उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। कार्यक्रम की शुरूआत भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा के अभिषेक और शांतिधारा से हुई। इसके बाद मंत्रोच्चार के साथ विशेष पूजन संपन्न हुआ। संगीतमय पूजन में जैन समाज के महिला-पुरुषों और युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। भक्ति संगीत और भगवान के जयकारों के बीच श्रद्धालुओं ने निर्वाण लाडू अर्पित कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर पद्म सरोवर की रचना की गई और धार्मिक परंपराओं के अनुसार भगवान का अभिषेक किया गया। माताजी ससंघ के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने धर्म लाभ लिया।

भगवान महावीर के निर्वाण से जुड़ी है दीपावली की परंपरा

गणिनी आर्यिका संगममति माताजी ने बताया कि जैन मान्यताओं के अनुसार भगवान महावीर स्वामी को कार्तिक अमावस्या के दिन बिहार के पावापुरी में निर्वाण अर्थात मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। उनके निर्वाण के समय उपस्थित प्रमुख गणधर गौतम स्वामी को उसी रात केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद उनके ज्ञान के प्रकाश को स्मरण करने के प्रतीक स्वरूप दीप प्रज्ज्वलित किए गए। इसी धार्मिक प्रसंग के कारण जैन समाज दीपावली को भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के रूप में मनाता है। जैन धर्मावलंबियों के लिए यह पर्व केवल दीप जलाने और खुशियां मनाने का अवसर नहीं, बल्कि आत्मा को विकारों से मुक्त करने और मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाला महापर्व है।

अहिंसा और संयम का संदेश देता है महावीर का जीवन

जिनेश जैन ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी ने संपूर्ण मानव समाज को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का संदेश दिया। उनके उपदेश आज भी जीवन में शांति, सद्भाव और आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। भगवान महावीर ने सिखाया कि किसी भी जीव को कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिए और सभी प्राणियों के प्रति दया एवं करुणा का भाव रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि दीपावली का पावन अवसर अपने भीतर के अज्ञान, क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे विकारों को दूर करने तथा आत्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचानने की प्रेरणा देता है।

महावीर के सिद्धांतों को जीवन में उतारें : अंजलि जैन

नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती अंजलि दिनेश जैन ने निर्वाण महोत्सव पर कहा कि भगवान महावीर स्वामी का जीवन और उनके उपदेश संपूर्ण मानव समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने अहिंसा, सत्य, प्रेम, त्याग और आपसी सद्भाव का जो संदेश दिया, वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि हमें केवल धार्मिक आयोजन करने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपने आचरण और व्यवहार में भी अपनाना चाहिए। सभी जीवों के प्रति करुणा, परिवार और समाज में प्रेम तथा जीवन में संयम रखना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धा होगी।

महावीर इंटरनेशनल डडूका ने 24 शोकग्रस्त परिवारों को बांटी मिठाई, मनाई सार्थक दिवाली

सातवें शोक निवारण आयोजन में दिवंगत आत्माओं को दी श्रद्धांजलि, परिजनों से मिलकर व्यक्त की संवेदनाएं



डडूका. शाबाश इंडिया। दीपोत्सव 2026 के अवसर पर महावीर इंटरनेशनल डडूका की ओर से सातवां शोक निवारण आयोजन किया गया। इसके तहत गांव के 24 शोकग्रस्त परिवारों के घर पहुंचकर मिठाई भेंट की गई और दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित कर परिजनों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त की गईं। आयोजन के तहत 8 नवंबर 2026 की शाम केंद्र अध्यक्ष वीर रणजीत सिंह सोलंकी, सचिव वीर अशोक कुमार रावल, कोषाध्यक्ष वीर योगेश स्वर्णकार, वीर पवन कुमार पाटीदार, वीर जगदीश वागड़िया, वीर हिम्मत सिंह सोलंकी और इंटरनेशनल डायरेक्टर वीर अजीत कोठिया के नेतृत्व में सदस्यों ने सभी 24 शोकग्रस्त परिवारों से मुलाकात की। इस दौरान मिठाई वितरित कर दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना की गई।

6 वर्षों से निभा रहे संवेदना की परंपरा

महावीर इंटरनेशनल डडूका की ओर से पिछले 6 वर्षों से दीपोत्सव के पहले दिन यह आयोजन किया जा रहा है। इसके तहत वर्षभर में जिन परिवारों में किसी सदस्य का निधन हुआ है, उनके घर जाकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी जाती है और परिजनों को मिठाई भेंट कर शोक निवारण की रस्म निभाई जाती है। आयोजन के दौरान शोकग्रस्त परिवारों के सदस्यों ने संस्था के इस प्रयास की सराहना की और सदस्यों को आशीर्वाद दिया। संस्था के सदस्यों ने दुख की घड़ी में परिवारों के साथ खड़े रहने और उन्हें सांत्वना देने का संदेश दिया।

भगवान महावीर के निर्वाण से जुड़ी है भाई दूज की परंपरा, जैन समाज ने मनाया पर्व

बहनों ने भाइयों का तिलक कर मिठाई खिलाई, सूर्य नगर में चार पीढ़ियों के 45 सदस्यों ने एक साथ मनाई भाई दूज



जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन धर्मावलंबियों ने बुधवार, 11 नवंबर को भाई दूज का पर्व हर्षोल्लास और पारिवारिक स्नेह के साथ मनाया। इस अवसर पर बहनों ने भाइयों का तिलक कर उन्हें मिठाई खिलाई और उनकी सुख-समृद्धि एवं दीर्घायु की कामना की। सूर्य नगर के ऋषभ मार्ग स्थित कोटखावदा हाउस में मैना देवी कासलीवाल और मुन्ना देवी वैद के नेतृत्व में परिवार की चार पीढ़ियों के 45 सदस्यों ने सामूहिक रूप से भाई दूज का पर्व मनाया। इस दौरान परिवार के सदस्यों ने एक-दूसरे के साथ खुशियां साझा कीं। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि जैन धर्म में भाई दूज का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है। इसकी परंपरा भगवान महावीर के निर्वाण के बाद उनके ज्येष्ठ भ्राता नंदीवर्धन और बहन सुदर्शना के स्नेह से जुड़ी मानी जाती है। उन्होंने बताया कि जैन मान्यता के अनुसार, भगवान महावीर के निर्वाण के बाद उनके भाई नंदीवर्धन शोक में डूब गए थे। ऐसे समय में उनकी बहन सुदर्शना ने उन्हें सांत्वना दी और अपने घर आमंत्रित किया। उन्होंने नंदीवर्धन का तिलक किया और उन्हें भोजन कराया। इससे उनका शोक कम हुआ। इसी प्रसंग से भाई दूज मनाने की परंपरा जुड़ी मानी जाती है। विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि यह पर्व भाई-बहन के प्रेम, विश्वास और स्नेह का प्रतीक है। इस दिन बहनें भाइयों का तिलक कर उनकी सुख-समृद्धि और लंबी आयु की कामना करती हैं।





भट्टारक जी की नसियां में भक्तिभाव से मनाया भगवान महावीर का 2553वां निर्वाणोत्सव

उपाध्याय उर्जयन्त सागर महाराज के सान्निध्य में चढ़ाया निर्वाण लाडू, जयपुर के 250 से अधिक दिगंबर जैन मंदिरों में हुए विशेष आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2553वां निर्वाणोत्सव सोमवार, 9 नवंबर को जैन धर्मावलंबियों ने श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया। इस अवसर पर गुलाबी नगरी जयपुर की भट्टारक जी की नसियां में राजस्थान जैन सभा की ओर से मुख्य आयोजन किया गया। उपाध्याय उर्जयन्त सागर महाराज के सान्निध्य में आयोजित निर्वाण लाडू महोत्सव में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष चंद जैन एवं महामंत्री मनीष बैद के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. विमल कुमार जैन के निर्देशन में भगवान महावीर की अष्टद्रव्य से संगीतमय पूजा-अर्चना की गई। कार्यक्रम संयोजक एवं गायक जिनेन्द्र जैन जीतू और गायिका बबीता जैन ने भक्ति संगीत की प्रस्तुतियां दीं। निर्वाण कांड की भाषा के सामूहिक उच्चारण के बाद भगवान महावीर के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर ''कार्तिक श्याम अमावस, शिविर पावापुरी ते वरना...'' के मंत्रोच्चार के साथ जयकारों के बीच निर्वाण लाडू अर्पित किया गया।

जीसी जैन परिवार ने चढ़ाया मुख्य निर्वाण लाडू

सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रदीप जैन एवं उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि महोत्सव में समाजश्रेष्ठी जीसी जैन एवं विशल्या देवी जैन ने मुख्य निर्वाण लाडू अर्पित किया। महापौर सुनील कोठारी समारोह गौरव के रूप में शामिल हुए। आर्किटेक्ट रीजनल काउंसिल एशिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष तुषार सोगानी ने भगवान महावीर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित किया। समाजश्रेष्ठी अशोक-शकुन्तला एवं अंकित चांदवाड़ ने उपाध्याय उर्जयन्त सागर महाराज के पाद प्रक्षालन के बाद शास्त्र भेंट किया। समाजश्रेष्ठी भूपेन्द्र-अनिता ठोलिया, विजय विराट दीवान, अनुराग-कीर्ति पाटनी तथा वैद्यराज फूलचंद-मनोरमा देवी जैन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर आर्किटेक्ट रीजनल काउंसिल एशिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष तुषार सोगानी और वैद्यराज फूलचंद जैन को समाज के प्रति उल्लेखनीय योगदान के लिए राजस्थान जैन सभा की ओर से प्रशस्ति-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।



भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलने की प्रेरणा दी

धर्मसभा में उपाध्याय उर्जयन्त सागर महाराज ने भगवान महावीर के सिद्धांतों और शिक्षाओं पर प्रकाश डालते हुए निर्वाण लाडू महोत्सव के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर संसार रूपी जेल से मुक्त हुए थे, इसलिए उनके निर्वाण की स्मृति में यह उत्सव मनाया जाता है। पंच परमेष्ठी की आराधना और भगवान की भक्ति से पुण्य की प्राप्ति होती है। इससे पहले बाल गायिका सौम्या जैन ने ''महावीर कहो, महावीर सुनो...'' मंगलाचरण प्रस्तुत किया। मुख्य संयोजक अशोक जैन नेता ने बताया कि दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की अखंड ज्योति से भगवान महावीर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित किया गया। संयोजक जिनेन्द्र जैन जीतू एवं एडवोकेट राजेश काला के अनुसार, महोत्सव में ''महावीर'' नाम के श्रावकों को पूजा करने का सौभाग्य मिला। मंत्री यशकमल अजमेरा ने बताया कि 108 दीपकों से भगवान महावीर की महाआरती के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष चंद जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रदीप जैन, उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा, महामंत्री मनीष बैद, मंत्री यशकमल अजमेरा, संयुक्त मंत्री आरके जैन रेलवे, मुख्य संयोजक अशोक जैन नेता, संयोजक जिनेन्द्र जैन जीतू, एडवोकेट राजेश काला, कार्यकारिणी सदस्य कमल बाबू जैन, राजीव पाटनी, भानू छाबड़ा, अनिल छाबड़ा, राकेश गोधा, सुभाष बज, राखी जैन, चेतन जैन निमोडिया, दर्शन जैन बाकलीवाल, मनीष सोगानी और भारतभूषण जैन सहित गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इनके अलावा जस्टिस एनके जैन, महेश काला, जय कुमार जैन कोटा वाले, वैद्यराज अशोक गोधा और डॉ. पीसी जैन सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। मंच संचालन महामंत्री मनीष बैद ने किया। आभार उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा ने व्यक्त किया।

जयपुर के 250 से अधिक जिनालयों में चढ़ाए गए निर्वाण लाडू

राजस्थान जैन सभा के उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि भगवान महावीर के मोक्ष कल्याणक दिवस एवं 2553वें निर्वाणोत्सव पर जयपुर के 250 से अधिक दिगंबर जैन मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना और निर्वाण लाडू समर्पण के आयोजन हुए। प्रातः अभिषेक और शांतिधारा के बाद भगवान महावीर की अष्टद्रव्य से पूजा की गई। निर्वाण कांड की भाषा के सामूहिक उच्चारण के बाद जयकारों के साथ मोक्ष कल्याणक अर्घ्य और निर्वाण लाडू चढ़ाए गए। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली के दूसरे दिन निर्वाण लाडू अर्पित किए गए।

@... पेज 8 पर

जैन ग्रंथों में मिलता है निर्वाणोत्सव का उल्लेख









जयपुर. शाबाश इंडिया

विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि आचार्य गुणभद्र ने सातवीं-आठवीं शताब्दी में रचित उत्तरपुराण में भगवान महावीर के निर्वाण का उल्लेख किया है। उनके अनुसार, ग्रंथ में कार्तिक कृष्ण अमावस्या को स्वाति नक्षत्र के उदय के समय भगवान महावीर के अघातिया कर्मों का क्षय कर निर्वाण प्राप्त करने का वर्णन मिलता है। उस समय देवों ने भगवान की पूजा की और दीपों की पंक्तियों से पावापुरी नगरी को प्रकाशित किया गया। सम्राट श्रेणिक सहित अन्य राजाओं ने अपनी प्रजा के साथ निर्वाण उत्सव मनाया। जैन परंपरा में इसी प्रसंग की स्मृति में प्रतिवर्ष भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव श्रद्धा से मनाया जाता है और निर्वाण लाडू अर्पित किया जाता है। उन्होंने बताया कि इसका उल्लेख हरिवंश पुराण में भी मिलता है। जैन मान्यता के अनुसार, भगवान महावीर ने 72 वर्ष की आयु में कार्तिक कृष्ण अमावस्या की प्रत्यूष बेला में स्वाति नक्षत्र के दौरान निर्वाण प्राप्त किया था। उसी समय उनके प्रथम गणधर गौतम स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। देवों ने रत्नमय दीप प्रज्ज्वलित कर उत्सव मनाया था।

संतों के सान्निध्य में हुए विशेष आयोजन

विनोद जैन के अनुसार, जयपुर के विभिन्न जिनालयों में आचार्य, मुनि और आर्यिका संघों के सान्निध्य में विशेष आयोजन किए गए। इनमें चित्रकूट कॉलोनी स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य विशद सागर महाराज ससंघ, जनकपुरी इमली वाला फाटक स्थित दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य आदित्य सागर महाराज ससंघ, निमोडिया के गोलोक धाम में आचार्य प्रज्ञा सागर महाराज ससंघ, पदमपुरा के साधु सेवा तीर्थ में आचार्य शशांक सागर मुनिराज ससंघ तथा दहमीकलां-बगरू में आचार्य नवीन नंदी महाराज के सान्निध्य में आयोजन हुए। इसी क्रम में मीरामार्ग स्थित आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में निर्यापक मुनि विलोक सागर एवं मुनि विबोध सागर महाराज, मुहाना मंडी के पार्श्व विहार स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में मुनि विश्व विजय सागर महाराज, पदमपुरा के श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र में मुनि मार्दव नंदी महाराज के सान्निध्य में पूजा-अर्चना और निर्वाण लाडू समर्पण हुआ। सेठी कॉलोनी स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में गणिनी प्रमुख आर्यिका जिन देवी माताजी ससंघ, मानसरोवर के वरुण पथ स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में गणिनी आर्यिका 105 विभाश्री माताजी ससंघ, बीलवा के नांगल्या स्थित विमल परिसर में गणिनी आर्यिका नंगमति माताजी ससंघ, मंगल विहार स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका अर्हं श्री माताजी ससंघ तथा कमला नेहरू नगर स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका विष्णु प्रभा माताजी ससंघ के सान्निध्य में भी धार्मिक आयोजन हुए। मुरलीपुरा स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका सुकाव्यमति माताजी ससंघ तथा विवेक विहार स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में आर्यिका सुविज्ञमति माताजी ससंघ के सान्निध्य में पूजा-अर्चना कर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया।

प्राचीन प्रतिमाओं के समक्ष भी चढ़ाया निर्वाण लाडू

विनोद जैन ने बताया कि गोपालजी का रास्ता स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर कालाडेरा (महावीर स्वामी) में भगवान महावीर स्वामी की प्राचीन खड्गासन प्रतिमा के समक्ष सुबह 6 बजे तथा बाहर की वेदी पर सुबह 8 बजे निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। इसके अलावा सांगानेर स्थित श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र मंदिर संघीजी, आगरा रोड स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरी, मोती सिंह भोमियों का रास्ता स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर चौबीस महाराज, तारों की कूट पर सूर्य नगर स्थित श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, आचार्यों का रास्ता स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर सिरमोरियान, वैशाली नगर स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर तथा सिद्धार्थ नगर स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर महावीर स्वामी खंडाकान सहित शहर के 250 से अधिक मंदिरों में विशेष आयोजन हुए। इन सभी मंदिरों में निर्वाण कांड की भाषा का सामूहिक उच्चारण और महावीराष्टक स्तोत्र का पाठ किया गया। भगवान महावीर की महाआरती के साथ धार्मिक कार्यक्रमों का समापन हुआ।

विनोद जैन कोटखावदा
उपाध्यक्ष, राजस्थान जैन सभा, जयपुर

खुले आसमान तले सुरों, शब्दों और स्वाद के उत्सव का साक्षी बनेगा 'शरद रंग'



12 से 15 नवंबर तक शिल्पग्राम में संगीत, कविता, फ्यूजन और देशज व्यंजनों का बहुरंगी संगम

उदयपुर. शाबाश इंडिया

दीपोत्सव की रोशनियों के बाद झीलों की नगरी अब शरद ऋतु की ठंडी शामों में कला और संस्कृति की गर्माहट महसूस करेगी। हवाला ग्राम स्थित शिल्पग्राम का मुक्ताकाशी रंगमंच 12 से 15 नवंबर तक ''शरद रंग'' के रंगों से सजने जा रहा है। खुले आकाश के नीचे आयोजित यह चार दिवसीय उत्सव संगीत, कविता, लोक-लय, समकालीन प्रयोगों और विविध स्वादों का ऐसा मिलन होगा, जो शहरवासियों के साथ पर्यटकों को भी विशेष अनुभव देगा।

मंच से आगे, संवेदनाओं का विस्तार

पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) की ओर से प्रतिदिन सायं 6.30 बजे शुरू होने वाली सांस्कृतिक संध्याएं केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहेंगी, बल्कि पीढ़ियों के बीच संवाद का माध्यम बनेंगी। कहीं पुरानी फिल्मों के गीत स्मृतियों के दरवाजे खोलेंगे, तो कहीं आधुनिक संगीत के साथ भारतीय तालों का नवाचार दर्शकों को नई ऊर्जा से भर देगा। शिल्पग्राम का प्राकृतिक परिवेश इन प्रस्तुतियों को और अधिक आत्मीय तथा जीवंत बनाएगा।

श्वेत-श्याम धुनों की सुनहरी वापसी

केंद्र निदेशक अश्विन एम दलवी ने बताया कि उत्सव का शुभारंभ 12 नवंबर को निश एंटरटेनमेंट की ''ब्लैक एंड व्हाइट संगीत संध्या'' से होगा। पुराने हिंदी सिनेमा की यादगार धुनें, सुरीले गीत और बीते दौर की संगीतात्मक संवेदनाएं इस शाम को नॉस्टेल्जिया से भर देंगी। रेडियो पर बजने वाले गीतों, ग्रामोफोन की मधुर ध्वनि और श्वेत-श्याम फिल्मों की मोहक दुनिया से जुड़ी स्मृतियां एक बार फिर श्रोताओं के मन में ताजा होंगी।

कहरवा की लय में नया संगीत-बोध

इसी कड़ी में 13 नवंबर को डॉ. विजय सिद्ध एवं दल ''कहरवा फ्यूजन'' की प्रस्तुति देंगे। भारतीय लोक-संगीत, सहज कहरवा ताल और आधुनिक वाद्यों के मेल से सजी यह संध्या परंपरा तथा प्रयोग के सुंदर संतुलन का अहसास कराएगी। जन-जन की लय मानी जाने वाली कहरवा जब समकालीन संगीत-भाषा से जुड़ेगी, तब मुक्ताकाशी रंगमंच की शाम में लोक-संवेदना का नया रंग घुलेगा।

पाक-कला पर संवाद और स्वाद का संसार

कार्यक्रम में 13 एवं 14 नवंबर को प्रातः 10 बजे बंजारा मंच पर भारतीय पाक कलाओं को लेकर दो दिवसीय चर्चा एवं संवाद सत्र आयोजित होगा। वहीं दोपहर 12 बजे से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न प्रांतों के व्यंजनों की सुगंध शिल्पग्राम परिसर को स्वादों का उत्सव बना देगी। दर्शक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ देश के विविध खान-पान का आनंद भी ले सकेंगे।

कविता, हंसी और हसरत भरा समापन

अगली कड़ी में 14 नवंबर की संध्या प्रसिद्ध कवि अरुण जेमिनी एवं दल के कवि सम्मेलन के नाम रहेगी, जिसमें हास्य, व्यंग्य, गीत और सामाजिक सरोकारों की कविताएं श्रोताओं को गुदगुदाने के साथ विचारों से भी जोड़ेगी। कार्यक्रम का समापन 15 नवंबर को हरप्रीत हसरत की ''एम्ब्रेस बाय हसरत'' प्रस्तुति से होगा। उनकी भावपूर्ण गायकी के साथ ''शरद रंग'' उदयपुर की सांस्कृतिक स्मृतियों में एक मधुर और यादगार पड़ाव बनकर दर्ज होगा।

रिपोर्ट:
राकेश शर्मा 'राजदीप'



जैन धर्मावलंबियों के नए साल का शुभारंभ, वीर निर्वाण संवत 2553 शुरू

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से नए वर्ष की शुरूआत, जयपुर में 15 चातुर्मास स्थलों पर जैन संतों के वर्षायोग का हुआ निष्ठापन

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन धर्मावलंबियों के नए साल वीर निर्वाण संवत् 2553 का शुभारंभ कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा, मंगलवार 10 नवंबर से हुआ। इस अवसर पर जैन मंदिरों में पूजा-अर्चना के विशेष आयोजन किए गए। समाज के लोगों ने एक-दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएं दीं। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि इससे पूर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या, सोमवार 9 नवंबर को वीर निर्वाण संवत् 2552 का समापन हुआ। विनोद जैन के अनुसार, इसी दिन जयपुर में संचालित 15 चातुर्मास स्थलों पर विराजमान दिगंबर जैन आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं, क्षुल्लकों और क्षुल्लिकाओं के चातुर्मास का निष्ठापन हुआ तथा वर्षायोग का समापन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों पर समारोह भी आयोजित किए गए। उन्होंने बताया कि कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन आचार्य भरत सागर महाराज का 20वां समाधि दिवस मनाया गया। वहीं, सायंकाल भगवान महावीर के प्रथम गणधर गौतम स्वामी का केवलज्ञान दिवस भी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर कई साधु-संतों के पिच्छिका परिवर्तन के कार्यक्रम भी आयोजित हुए।

राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि इससे पूर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या, सोमवार 9 नवंबर को वीर निर्वाण संवत् 2552 का समापन हुआ।

2000 मंदिरों और बावड़ियों की सफाई से रोटरी दृष्टि ने रचा सेवा का नया अध्याय



धार्मिक आस्था, जल-विरासत और स्वच्छता को जोड़ने वाली पहल; अब पॉलीथिन मुक्त उदयपुर के लिए बनेगी व्यापक कार्ययोजना

उदयपुर. शाबाश इंडिया

सेवा जब निरंतर संकल्प का रूप लेती है, तो वह केवल उपलब्धि नहीं बल्कि समाज के लिए प्रेरणा बन जाती है। रोटरी क्लब ऑफ उदयपुर दृष्टि ने इसी भाव को साकार करते हुए उदयपुर, आसपास के क्षेत्रों, बांसवाड़ा और थाना गांव में कुल 2000 मंदिरों एवं प्राचीन बावड़ियों की सफाई कर स्वच्छता और धरोहर संरक्षण का उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित किया है। एनआईसीसी परिसर में आयोजित दीपावली स्नेहमिलन समारोह में क्लब संरक्षक डॉ. स्वीटी छाबड़ा ने बताया कि यह अभियान केवल सफाई तक सीमित नहीं रहा, बल्कि धार्मिक स्थलों की गरिमा बनाए रखने और पारंपरिक जल संरचनाओं के संरक्षण के प्रति जनचेतना जगाने का माध्यम भी बना। उन्होंने कहा कि प्राचीन बावड़ियां हमारी जल संस्कृति, स्थापत्य कला और लोक-स्मृतियों की अनमोल धरोहर हैं, जिनकी सुरक्षा सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने बताया कि क्लब अब उदयपुर को पॉलीथिन मुक्त बनाने के लिए एक व्यापक जन-अभियान शुरू करेगा। इसके तहत रेलवे स्टेशन और हवाई अड्डे जैसे प्रमुख प्रवेश स्थलों को पॉलीथिन मुक्त बनाने के लिए संबंधित अधिकारियों से संवाद किया जाएगा। महापौर पारस सिंघवी से मिलकर शहर के लिए प्रभावी कार्ययोजना तैयार करने पर भी चर्चा की जाएगी। डॉ. छाबड़ा ने कहा कि 2000 मंदिरों और बावड़ियों की सफाई महज एक आंकड़ा नहीं, बल्कि क्लब सदस्यों की टीम भावना, सामाजिक जिम्मेदारी और सेवा समर्पण का जीवंत प्रमाण है। अभियान के दौरान लोगों को एकल उपयोग प्लास्टिक से दूरी बनाने, कचरा निर्धारित स्थान पर डालने तथा जलस्रोतों में अपशिष्ट नहीं डालने का संदेश भी दिया गया। क्लब अध्यक्ष रोटेरियन विक्रमादित्य सिंह कृष्णावत के नेतृत्व में चले अभियान में सचिव रोटेरियन मोहित राजानी, उपाध्यक्ष रोटेरियन सुनीता सिंघवी, चार्टर्ड प्रेसिडेंट डॉ. दृष्टि छाबड़ा, डायरेक्टर ऑफ पब्लिक इमेज रोटेरियन परमेश्वर अग्रवाल, क्लब लर्निंग फैसिलिटेटर रोटेरियन रश्मि बोहरा तथा एडिटर रोटेरियन विप्लव जैन का विशेष योगदान रहा। समारोह में रोटरी क्लब मीरा की अध्यक्ष कक्कू लिखारी एवं इनरव्हील क्लब दीवास की संरक्षक रेखा भाणावत भी उपस्थित थीं। क्लब पदाधिकारियों ने विश्वास जताया कि सेवा, स्वच्छता, पर्यावरण और सांस्कृतिक विरासत को साथ लेकर चलने वाली ऐसी पहल आगे भी निरंतर जारी रहेगी।

रिपोर्ट: राकेश शर्मा 'राजदीप'

छोटे विनायक स्थापना के साथ 16,108 श्री तुलसी-शालिग्राम विवाह महोत्सव का शुभारंभ

20 नवंबर को मेडिसिटी ग्राउंड पर होगा भव्य आयोजन, मैदान की सफाई के लिए 12 नवंबर से शुरू होगा विराट श्रमदान महाभियान



भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। धर्मनगरी भीलवाड़ा 20 नवंबर को प्रभु भक्ति का नया इतिहास रचने जा रही है। आजादनगर स्थित मेडिसिटी ग्राउंड पर 16,108 श्री तुलसी-शालिग्राम विवाह महामहोत्सव का भव्य आयोजन होगा। पहली बार राजाधिराज मेवाड़ धणी श्री गढ़बोर चारभुजानाथ बारात लेकर भीलवाड़ा पधारेंगे। उनके साथ भीलवाड़ा के विभिन्न मंदिरों में विराजित भगवान चारभुजानाथ भी बारात लेकर पहुंचेंगे। सकल सनातन परिवार की प्रेरणा से श्री तुलसी-शालिग्राम विवाह समिति के तत्वावधान में होने वाले इस दिव्य आयोजन को लेकर शहरवासियों में उत्साह और उल्लास का माहौल है। हर कोई इस विराट धार्मिक आयोजन में सहभागी बनने के लिए उत्साहित है। महोत्सव के सूत्रधार श्रीविष्णु कृष्ण तनय महाराज के सान्निध्य में सोमवार को छोटे विनायक की विधि-विधानपूर्वक स्थापना के साथ आयोजन का मंगल शुभारंभ हुआ। छोटे विनायक की स्थापना श्री गढ़बोर चारभुजानाथजी के साथ विवाह के लिए विराजित होने वाली तुलसी महारानीजी के धर्म माता-पिता राधेश्याम चेचाणी परिवार के निवास पर तथा बड़े चारभुजानाथजी के साथ विवाह के लिए विराजित होने वाली तुलसीजी के धर्म माता-पिता रामप्रकाश मनीष बहेड़िया परिवार के आंगन में की गई। आयोजन समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष छगनलाल जैन ने बताया कि छोटे विनायक की स्थापना के साथ ही तुलसीजी के विवाह की पारंपरिक मांगलिक रस्मों का शुभारंभ हो गया है। वैवाहिक रस्में शुरू होते ही धर्म माता-पिता बनने जा रहे श्रद्धालुओं और आयोजन में सहभागी भक्तों में विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है।

आचार्य पुलकसागर महाराज ससंघ की भीलवाड़ा से विदाई 15 नवंबर को

पिच्छिका परिवर्तन समारोह के बाद सूर्यमहल से करेंगे मंगल विहार, श्रद्धालु देंगे भावपूर्ण विदाई



भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। धर्मनगरी भीलवाड़ा में ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न करने के बाद राष्ट्रसंत मनोज्ञाचार्य पुलकसागर महाराज ससंघ 15 नवंबर को यहां से मंगल विहार करेंगे। आचार्यश्री की विदाई से पूर्व रविवार को दोपहर 1:30 बजे शास्त्रीनगर स्थित सूर्यमहल में पिच्छिका परिवर्तन समारोह आयोजित होगा। श्री पुलकसागर चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी ने बताया कि समारोह में आचार्यश्री भीलवाड़ा चातुर्मास का अंतिम आशीर्वचन प्रदान करेंगे। जैन परंपरा के अनुसार, चातुर्मास के दौरान संतों की सेवा करने वाले विशेष भक्तों को उनकी पुरानी पिच्छिका प्रदान की जाती है, जबकि समाज के विभिन्न संगठन संतों को नवीन पिच्छिका भेंट करते हैं। इस समारोह के माध्यम से भीलवाड़ा के श्रद्धालु और भक्तगण आचार्यश्री को भावपूर्ण विदाई देंगे। चातुर्मास समिति आयोजन की तैयारियों में जुटी है। समिति की भावना है कि जिस भव्यता के साथ आचार्यश्री का मंगल प्रवेश हुआ था, उसी भव्यता के साथ उनकी विदाई भी की जाए। पिच्छिका परिवर्तन समारोह के बाद 15 नवंबर को दोपहर 3 बजे आचार्य पुलकसागर महाराज ससंघ सूर्यमहल से मंगल विहार करेंगे। इस दौरान वे शास्त्रीनगर जैन मंदिर के दर्शन कर सिंधुनगर, राजीव गांधी चौराहा, महाराणा टॉकीज और माणिक्यनगर होते हुए पुराने भीलवाड़ा के जैन मंदिरों के दर्शन करेंगे। इसके बाद तिलकनगर स्थित यश विहार में रात्रि विश्राम करेंगे। 16 नवंबर को सुबह 7 बजे यहां से विहार कर कोटड़ी रोड स्थित दिनेश गोधा के फार्म हाउस पहुंचेंगे, जहां आहारचर्या होगी। चातुर्मास आयोजन समिति ने सभी श्रद्धालुओं और भक्तों से आचार्यश्री के विदाई समारोह में शामिल होकर इसे ऐतिहासिक और यादगार बनाने की अपील की है।

चमत्कारेश्वर महादेव मंदिर में 60वां अन्नकूट महोत्सव संपन्न, 11 हजार श्रद्धालुओं ने ग्रहण की प्रसादी



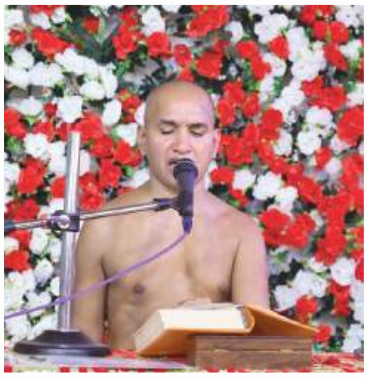
पानीपेच स्थित मंदिर में शिव परिवार की आकर्षक झांकियां सजाईं, अतिथियों का दुपट्टा और स्मृति चिह्न भेंटकर किया सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया। पानीपेच, झोटवाड़ा रोड स्थित चमत्कारेश्वर महादेव मंदिर में 60वां अन्नकूट महोत्सव धूमधाम और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने अन्नकूट प्रसादी ग्रहण की। मंदिर समिति के प्रचार-प्रसार मंत्री महेश सैनी ने बताया कि महोत्सव के अवसर पर अन्न से शिव परिवार की आकर्षक झांकियां सजाई गईं। मंदिर समिति के कार्यकारी अध्यक्ष रविंद्र यादव के निर्देशन में मंदिर परिसर में करीब 11,000 श्रद्धालुओं को प्रसादी वितरित की गई। इसमें मूंग, चवला, मोठ, मिक्स गट्टे की सब्जी, बेसन की कढ़ी सहित विभिन्न व्यंजन शामिल थे। कार्यक्रम में जयपुर की उप महापौर सरोज कंवर, रणजीत सिंह सोडाला, राजस्थान वित्त आयोग के अध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी, मुख्य सलाहकार समिति के अध्यक्ष हरीश शर्मा, राजेंद्र शर्मा, विनोद अग्रवाल, महेश सैनी, रवि प्रकाश चौधरी, कालीचरण शर्मा, राधाकिसन मांडन, महेंद्र खंडेलवाल, विष्णु बियानी, श्यामलाल यादव, विमल अग्रवाल और राजू जांगिड़ सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे। इस अवसर पर मंदिर समिति की ओर से अतिथियों को दुपट्टा और बाबा का स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया। वहीं, मंदिर समिति के प्रचार-प्रसार मंत्री महेश सैनी के जन्मदिन के अवसर पर उप महापौर ने उन्हें दुपट्टा पहनाकर शुभकामनाएं दीं।

सुंदर विचारों और आचरण से बनता है सुंदर जीवनः मुनि सुयशसागर

झुमरीतिलैया के दिगंबर जैन मंदिर में धर्मसभा को किया संबोधित, सैकड़ों श्रद्धालु हुए शामिल

झुमरीतिलैया. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर में बुधवार सुबह भगवान जिनेंद्रदेव के अभिषेक और शांतिधारा के बाद धर्मसभा आयोजित हुई। मंदिर में विराजमान श्रमण मुनि श्री 108 सुयशसागरजी महाराज ने अपने प्रवचन में कहा कि सुंदर विचारों और सुंदर आचरण से जीवन सुंदर बनता है। ऐसा सुंदर जीवन ही एक दिन व्यक्ति को परमात्मा के निकट ले जाता है। मुनिश्री ने कहा कि जिस प्रकार बूंद-बूंद से घड़ा भरता है, एक-एक मोती को धागे में पिरोने से माला बनती है और एक-एक ईंट जोड़ने से इमारत खड़ी होती है, उसी प्रकार जीवन के अच्छे गुणों को एक सूत्र में पिरोने से जीवन श्रेष्ठ बनता है। आचार्य कहते हैं कि जीवन में जोड़ो, छोड़ो मत और जब जोड़ो तो बेजोड़ जोड़ो। उन्होंने कहा कि जीवन एक किताब की तरह है। हमें देखना चाहिए कि उसमें क्या लिखा है। जो अच्छा है, उसे अपने जीवन में उतारना चाहिए, ताकि हर कोई उस जीवन रूपी किताब को पढ़ना पसंद करे। अपने जीवन को इतना अच्छा बनाना चाहिए कि उससे प्रेरणा लेकर अनेक लोग अपने जीवन की किताब तैयार कर सकें। मुनिश्री ने कहा कि हमारे पूज्य महापुरुषों ने अपने जीवन में महान कार्य किए। तीर्थंकरों ने अपने जीवन में ऐसे आदर्श स्थापित किए, जिन्हें गणधरों ने आत्मसात किया। गणधरों का जीवन भी इतना महान था कि मुनिराजों ने उससे प्रेरणा लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाया। आज हमें भी उनके जीवन से सीख लेकर अपनी जीवन रूपी किताब को बेहतर बनाना चाहिए। उन्होंने संदेश दिया, ''सुनो, गुनो, चुनो और अपने जीवन में अच्छा-अच्छा बुनो।'' मुनिश्री ने आगे कहा कि शरीर का वियोग धर्म है और चेतन का संयोग धर्म है। जीवन में शोक की स्थिति आती है, लेकिन हमें वक्र गति छोड़कर ऋजु गति अर्थात सरल मार्ग अपनाना चाहिए और अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि शरीर में सुख नाम का गुण नहीं है और आत्मा में दुख का गुण नहीं है। आत्मा को देखने, अनुभव करने और जानने पर व्यक्ति को दुख की अनुभूति नहीं होती। आत्मानुभूति ही जीवन को सही दिशा प्रदान करती है। धर्मसभा में दुर्ग, कुनकुरी और रांची से आए श्रद्धालुओं सहित समाज के सैकड़ों लोग उपस्थित रहे। वीरोगोदय वषायोग कमेटी के सदस्य भी कार्यक्रम में शामिल हुए। बुधवार की आहारचर्या का सौभाग्य अनिल-संगीता जैन पाटोदी तथा राकेश-प्रीति जैन छाबड़ा परिवार को प्राप्त हुआ। यह जानकारी कोडरमा के मीडिया प्रभारी राजकुमार जैन अजमेरा और नवीन जैन ने दी।



फागी में भक्तिभाव से मनाया भगवान महावीर का 2553वां निर्वाणोत्सव, चढ़ाया निर्वाण लाडू

आर्यिका श्रुतमति और आर्यिका सुबोधमति माताजी ससंघ के सान्निध्य में हुए आयोजन, क्षेत्र के जैन मंदिरों में भी हुई विशेष पूजा-अर्चना

फागी. शाबाश इंडिया

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर, जीवो और जीने दो का दिव्य संदेश देने वाले भगवान महावीर का 2553वां निर्वाणोत्सव सोमवार, 9 नवंबर को फागी कस्बे में श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। कस्बे में विराजमान आर्यिका श्रुतमति माताजी और आर्यिका सुबोधमति माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में मुख्य आयोजन हुआ। राजस्थान जैन सभा की फागी शाखा के महामंत्री राजाबाबू गोधा ने बताया कि कस्बे के आदिनाथ जिनालय, पार्श्वनाथ मंदिर, मुनि सुव्रतनाथ जिनालय, त्रिमूर्ति मंदिर, पार्श्वनाथ चैत्यालय, चंद्रप्रभु नसियां और चंद्रपुरी दिगंबर जैन मंदिर सहित आसपास के चकवाड़ा, चोरू, मंडावरी, नारेड़ा, मेहंदवास, नीमेडा, लसाड़िया और लदाना सहित विभिन्न स्थानों पर धार्मिक आयोजन हुए। सभी मंदिरों में भगवान महावीर की अष्टद्रव्य से संगीतमय पूजा-अर्चना की गई। इसके बाद निर्वाण कांड का सामूहिक पाठ किया गया। भगवान महावीर के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर जयकारों के बीच सुबह 8 बजे निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। राजस्थान जैन महासभा की फागी शाखा के अध्यक्ष महावीर अजमेरा और अग्रवाल समाज फागी के अध्यक्ष महावीर झंडा ने बताया कि जैन ग्रंथ उत्तर पुराण में आचार्य गुणभद्र ने भगवान महावीर के निर्वाण का उल्लेख किया है। जैन मान्यता के अनुसार, कार्तिक कृष्ण अमावस्या को स्वाति नक्षत्र में भगवान महावीर ने अघातिया कर्मों का क्षय कर निर्वाण प्राप्त किया था। उस समय देवों ने भगवान की पूजा की और दीपों की पंक्तियों से पावापुरी नगरी को प्रकाशित किया। सम्राट श्रेणिक सहित अनेक राजाओं ने अपनी प्रजा के साथ निर्वाण उत्सव मनाया। इसी परंपरा के अनुसार प्रतिवर्ष भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव श्रद्धा और भक्तिभाव से मनाया जाता है तथा निर्वाण लाडू अर्पित किया जाता है। अग्रवाल समाज के मंत्री कमलेश चौधरी ने बताया कि भगवान महावीर के निर्वाण का उल्लेख प्रसिद्ध जैन ग्रंथ हरिवंश पुराण में भी मिलता है। जैन मान्यता के अनुसार, भगवान महावीर ने 72 वर्ष की आयु में कार्तिक कृष्ण अमावस्या की बेला में स्वाति नक्षत्र के दौरान निर्वाण प्राप्त किया था। उसी समय भगवान महावीर के प्रथम गणधर गौतम स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। देवों ने रत्नमयी दीपों से प्रकाश कर उत्सव मनाया था। राजाबाबू गोधा ने बताया कि फागी में विराजमान आर्यिका श्रुतमति माताजी और आर्यिका सुबोधमति माताजी के सान्निध्य के साथ गुणस्थली चकवाड़ा में विराजमान गणिनी आर्यिका सम्मेद शिखर माताजी और आर्यिका केवलश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में भी विशेष पूजा-अर्चना और निर्वाण लाडू अर्पित करने के आयोजन हुए। मंदिरों में सामूहिक रूप से निर्वाण कांड का पाठ और महावीराष्टक स्तोत्र का वाचन किया गया। इसके बाद भगवान महावीर की महाआरती की गई। कार्यक्रमों में सकल जैन समाज के श्रद्धालु उपस्थित रहे।



चमत्कारेश्वर महादेव मंदिर में 60वां अन्नकूट महोत्सव संपन्न, 11 हजार श्रद्धालुओं ने ग्रहण की प्रसादी

पानीपेच स्थित मंदिर में शिव परिवार की आकर्षक झांकियां सजाईं, अतिथियों का दुपट्टा और स्मृति चिह्न भेंटकर किया सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया

पानीपेच, झोटवाड़ा रोड स्थित चमत्कारेश्वर महादेव मंदिर में 60वां अन्नकूट महोत्सव धूमधाम और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने अन्नकूट प्रसादी ग्रहण की। मंदिर समिति के प्रचार-प्रसार मंत्री महेश सैनी ने बताया कि महोत्सव के अवसर पर अन्न से शिव परिवार की आकर्षक झांकियां सजाई गईं। मंदिर समिति के कार्यकारी अध्यक्ष रविंद्र यादव के निर्देशन में मंदिर परिसर में करीब 11,000 श्रद्धालुओं को प्रसादी वितरित की गई। इसमें मूंग, चवला, मोठ, मिक्स गट्टे की सब्जी, बेसन की कढ़ी सहित विभिन्न व्यंजन शामिल थे। कार्यक्रम में जयपुर की उप महापौर





सरोज कंवर, रणजीत सिंह सोडाला, राजस्थान वित्त आयोग के अध्यक्ष अरुण चतुवेर्दी, मुख्य सलाहकार समिति के अध्यक्ष हरीश शर्मा, राजेंद्र शर्मा, विनोद अग्रवाल, महेश सैनी, रवि प्रकाश चौधरी, कालीचरण शर्मा, राधाकिसन मांडन, महेंद्र खंडेलवाल, विष्णु बियानी, श्यामलाल यादव, विमल अग्रवाल और राजू जांगिड़ सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे। इस अवसर पर मंदिर समिति की ओर से अतिथियों को दुपट्टा और बाबा का स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया। वहीं, मंदिर समिति के प्रचार-प्रसार मंत्री महेश सैनी के जन्मदिन के अवसर पर उप महापौर ने उन्हें दुपट्टा पहनाकर शुभकामनाएं दीं।

किशनगढ़ में भव्यता से मनाया भगवान महावीर स्वामी का 2553वां निर्वाण महोत्सव

पावापुरी की आकर्षक कृत्रिम रचना में विराजे भगवान महावीर, कमल सरोवर बना श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र

किशनगढ़. शाबाश इंडिया

कार्तिक कृष्ण अमावस्या यानी दीपावली के पावन अवसर पर आर.के. कम्युनिटी सेंटर, किशनगढ़ में भगवान महावीर स्वामी का 2553वां निर्वाण महोत्सव श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। कार्यक्रम परम पूज्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री 108 विहर्षसागर महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। महोत्सव के अवसर पर भगवान महावीर स्वामी की निर्वाण स्थली पावापुरी की भव्य एवं आकर्षक कृत्रिम रचना तैयार की गई। इसमें पावापुरी मंदिर के साथ सुंदर कमल सरोवर का निर्माण किया गया, जो श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। इस कृत्रिम पावापुरी में भगवान महावीर स्वामी को विराजमान किया गया। पावापुरी की कृत्रिम रचना का अनावरण करने का सौभाग्य अनिलकुमार, आकाश, विकास, नवकार एवं कियांश गंगवाल परिवार (दांतरी वाले) को प्राप्त हुआ। वहीं, भगवान महावीर स्वामी के चरणों में निर्वाण लाडू अर्पित करने का सौभाग्य अशोककुमार, सुरेशकुमार, विमलकुमार पाटनी, सुशीला पाटनी, शांता पाटनी, तारिका पाटनी एवं आर.के. मार्बल परिवार को प्राप्त हुआ। इसके साथ ही अनिलकुमार, आकाश एवं विकास गंगवाल परिवार (दांतरी वाले) ने भी निर्वाण लाडू अर्पित कर पुण्यार्जन किया। इस अवसर पर मुख्य 25 परिवारों सहित सकल दिगंबर जैन समाज के श्रद्धालुओं ने भगवान महावीर स्वामी के चरणों में निर्वाण लाडू अर्पित कर धर्मलाभ प्राप्त किया। पावापुरी की भव्य कृत्रिम रचना और आकर्षक कमल सरोवर के दर्शन करने के लिए हजारों की संख्या में श्रद्धालु एवं धर्मप्रेमी पहुंचे। पूरा आयोजन भक्तिमय वातावरण, श्रद्धा और उल्लास के साथ संपन्न हुआ।





श्रेष्ठ संकल्प और सत्कार्य से ही सार्थक होता है नववर्ष: युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी

चार दिवसीय तप, मौन और एकांत साधना के बाद शांतिभवन पहुंचे युवाचार्यश्री का जयकारों से अभिनंदन, 19 नवंबर को रौनक बापना को देंगे भागवती दीक्षा



भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। जीवन की दिशा केवल इच्छाओं से नहीं, बल्कि संकल्पों से बदलती है। अर्जित साधनों का एक अंश सत्कार्य में लगाना और जीवन को अनुशासन, संयम तथा उत्तरदायित्व से जोड़ना ही नववर्ष के आरंभ को सार्थक बनाता है। यह उद्बोधन श्रमणसंघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी ने शांतिभवन में भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक, दीपावली, गौतम प्रतिपदा एवं नववर्ष अभिनंदन के अवसर पर दिए। चार दिवसीय तप, मौन और एकांत साधना पूर्ण करने के बाद युवाचार्यश्री ने श्रद्धालुओं को विशेष मंगलपाठ और आशीर्वचन प्रदान किए। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर के निर्वाण के 2552 वर्ष पूर्ण होने के साथ वीर निर्वाण संवत 2553 का शुभारंभ हुआ है। गौतम प्रतिपदा भगवान महावीर की देशना, गौतम स्वामी के केवलज्ञान और सुधर्म स्वामी द्वारा संघ व्यवस्था का दायित्व संभालने की परंपरा से जुड़ा महत्वपूर्ण दिवस है। युवाचार्यश्री ने कहा कि वर्षारंभ केवल शुभकामनाएं देने का अवसर बनकर न रह जाए,



बल्कि इसके साथ कोई श्रेष्ठ संकल्प भी जुड़ना चाहिए। व्यक्ति अपनी कमाई और सामर्थ्य का कुछ अंश सत्कार्य के लिए नियोजित करे तो उसका लाभ केवल स्वयं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समाज और धर्मकार्य तक पहुंचता है। गौतम स्वामी के व्यक्तित्व का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि विनय, समर्पण और गुरु आज्ञा के प्रति उनकी निष्ठा प्रत्येक साधक के लिए आदर्श है। भगवान महावीर के निर्वाण और गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद सुधर्म स्वामी ने संघ व्यवस्था का दायित्व संभाला। यही परंपरा चतुर्विध संघ में अनुशासन, मयार्दा और साधना की निरंतरता का आधार बनी। युवाचार्यश्री ने भीलवाड़ा चातुर्मास की व्यवस्थाओं के लिए श्रीसंघ शांतिभवन के पदाधिकारियों, सहयोगी संस्थाओं और कार्यकर्ताओं की सराहना की। उन्होंने कहा कि बड़े धार्मिक आयोजनों की गरिमा उनके पीछे कार्य करने वाले समर्पित और अनुशासित सहयोग से बनती है।

19 नवंबर को रौनक बापना को मिलेगी भागवती दीक्षा

इसी अवसर पर श्रीसंघ शांतिभवन की विनती स्वीकार करते हुए युवाचार्यश्री ने यशोदीप्ति मधुकंवरजी के सान्निध्य में अध्ययनरत वैरागी बहन रौनक बापना जैन को 19 नवंबर 2026 को शांतिभवन में भागवती दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की। श्रीसंघ शांतिभवन के मंत्री नवरतनमल भलावत ने बताया कि मंगलपाठ से पूर्व हितमित भाषी हितेंद्र ऋषिजी, यशोदीप्ति मधुकंवरजी, उपप्रवर्तिनी दिव्यज्योतिजी और स्मितभाषी पीयूषदर्शनाजी सहित संत-साध्वीवृंद ने श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र की अंतिम गाथा का वाचन कराया। इसके बाद गौतम रास का सामूहिक पाठ हुआ। चार दिवसीय तप, मौन और एकांत साधना पूर्ण कर विशेष मंगलपाठ एवं आशीर्वचन समारोह में पहुंचे युवाचार्यश्री का शांतिभवन आनंद अनुभूति चातुर्मास के संरक्षक नवरतनमल बंब, संयोजक कंवरलाल सूरिया, मदनलाल चौरड़िया, उपाध्यक्ष सुशील चपलोत, प्रकाश पीपाड़ा, नरेंद्र भंडारी, महावीर युवक मंडल के बाबूलाल सूर्या, अरुण डांगी, राजेंद्र सेठिया तथा शांतिभवन जैन महिला मंडल की अध्यक्ष सिम्मी पोखरणा, चंदा कोठारी, सरिता पोखरणा और नीतू चौरड़िया सहित पदाधिकारियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने जयकारों के साथ अगवानी कर अभिनंदन किया।

प्रवक्ता : सुनील चपलोत
शांतिभवन, भोपालगंज, भीलवाड़ा

भोपालगंज के महावीर दिगंबर जैन मंदिर के शिखर पर चढ़ाई ध्वजा

भगवान महावीर के मोक्ष कल्याणक पर अभिषेक, शांतिधारा और निर्वाण लाडू अर्पण का हुआ आयोजन



भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। भोपालगंज स्थित दिगंबर जैन पंचायत के महावीर मंदिर में भगवान महावीर स्वामी के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण किया गया। मंदिर के मैनेजिंग ट्रस्टी जयकुमार टोंगिया ने बताया कि प्रातः मूलनायक भगवान महावीर स्वामी सहित मंदिर में विराजित सभी प्रतिमाओं का अभिषेक किया गया। इसके बाद अनिल अजमेरा, रमेश पाटोदी, प्रभा बाकलीवाल, चंद्रसेन अजमेरा, विजय पंचोली, भागचंद और सोगानी ने शांतिधारा की। तत्पश्चात श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से भगवान महावीर स्वामी को निर्वाण लाडू अर्पित किया। इस अवसर पर विजय पंचोली, संजय सोगानी, जयकुमार टोंगिया, सुनील जैन, नीता टोंगिया और शरद पंचोली ने मंदिर के शिखर पर ध्वजा चढ़ाई। ध्वजारोहण के दौरान श्रद्धालुओं ने जयकारे लगाए और हर्षोल्लास के साथ धार्मिक आयोजन में भाग लिया।

बापूनगर जैन मंदिर में भक्तिभाव से मनाया भगवान महावीर का मोक्ष कल्याणक महोत्सव

महामस्तकाभिषेक, शांतिधारा और निर्वाण लाडू अर्पण के साथ हुए धार्मिक आयोजन, शाम को की गई भव्य आरती



भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। बापूनगर स्थित श्री पद्मप्रभु दिगंबर जैन मंदिर में भगवान महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक महोत्सव उत्साह और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। ट्रस्ट अध्यक्ष लक्ष्मीकांत जैन ने बताया कि प्रातः मूलनायक भगवान पद्मप्रभु सहित मंदिर में विराजित सभी प्रतिमाओं का महामस्तकाभिषेक किया गया। इसके बाद अशोक कुमार, विनोद और अरविंद पाटोदी परिवार ने भगवान पद्मप्रभु पर, जबकि चांदमल और विनय कुमार जैन ने भगवान आदिनाथ एवं मुनिसुव्रतनाथ पर शांतिधारा की। भगवान शांतिनाथ और पार्श्वनाथ पर भी शांतिधारा की गई। इसके बाद श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से भगवान महावीर स्वामी की पूजा-अर्चना कर अर्घ्य समर्पित किए। निर्वाण कांड के पाठ के साथ अशोक कुमार, विकास, विनोद और अरविंद पाटोदी परिवार ने भगवान महावीर स्वामी के चरणों में मुख्य निर्वाण लाडू अर्पित किया। उपस्थित श्रद्धालुओं ने जयकारों के साथ इसकी अनुमोदना की। प्रचार मंत्री प्रकाश पाटनी ने बताया कि कार्यक्रम के समापन पर पुरुषों, महिलाओं और युवाओं ने एक-दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर बड़ी संख्या में धर्मावलंबी उपस्थित रहे। सायंकाल भगवान महावीर स्वामी की भव्य आरती की गई।

कुचामन सिटी में श्रद्धा-भक्ति से मनाया भगवान महावीर का 2553वां मोक्ष कल्याणक









निर्वाण लाडू समर्पित कर किया पूजन, सामूहिक दीपावली स्नेह मिलन में हाउजी और लकी ड्रॉ का आयोजन

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया। जीवो और जीने दो तथा अहिंसा का संदेश देने वाले भगवान महावीर स्वामी का 2553वां मोक्ष कल्याणक सकल दिगंबर जैन समाज की ओर से श्री जैन वीर मंडल के तत्वावधान में श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ मनाया गया। प्रातःकाल शहर के सभी जिनालयों में कलशाभिषेक, शांतिधारा, पूजन और विधान के आयोजन हुए। डीडवाना रोड स्थित भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर में बड़े बाबा की सवा 7 फीट ऊंची विशाल प्रतिमा का सैकड़ों श्रावकों ने कलशाभिषेक और शांतिधारा कर पूजन किया। भगवान महावीर के मोक्ष कल्याणक और अमावस्या के पावन अवसर पर श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से निर्वाण लाडू समर्पित कर धर्मलाभ प्राप्त किया।

सामूहिक दीपावली स्नेह मिलन में उमड़ा उत्साह

इसके बाद सुबह 11:30 बजे समाज का सामूहिक दीपावली स्नेह मिलन समारोह आयोजित हुआ। जयकुमार पहाड़िया, सोभागमल गंगवाल, सुभाष पहाड़िया, विनोद झांझरी तथा हाउजी एवं लकी ड्रॉ के पुरस्कार प्रदाता श्रावक श्रेष्ठी अनिल कुमार, पंकज कुमार, यथार्थ और दुलीचंद डोसी परिवार ने भगवान के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। समारोह में अशोक झांझरी, पार्षद बरखा रानी पाटनी, गुंजन गंगवाल और वर्षा झांझरी ने हाउजी एवं लकी ड्रॉ का आयोजन कराया तथा विजेताओं की घोषणा की। लकी ड्रॉ में प्रथम पुरस्कार श्रावक श्रेष्ठी नरेंद्र कुमार एवं श्रीमती रंजू पहाड़िया परिवार, द्वितीय पुरस्कार सुमति कुमार एवं सक्षम पहाड़िया परिवार तथा तृतीय पुरस्कार सुरेश कुमार एवं राजीव पाटोदी परिवार को प्रदान किया गया। समारोह में समाजजनों ने नृत्य-संगीत के साथ उत्साहपूर्वक भाग लिया। डोसी परिवार की ओर से मंच पर आकर नृत्य करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

समाजजनों का सराहनीय सहयोग

कार्यक्रम में देवेंद्र पहाड़िया, सुभाष रावका, पवन गोधा, अशोक अजमेरा, राजकुमार बज, सचिन गंगवाल, प्रमोद पांड्या और अभिषेक पाटनी सहित समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों एवं समाजजनों ने सहयोग प्रदान किया।

-सुभाष पहाड़िया



अतिशय क्षेत्र रैवासा में किशनगढ़ के भामाशाह पाटनी परिवार ने किए दर्शन

आरके मार्बल ग्रुप के चेयरमैन अशोक पाटनी ने 1008 सुमतिनाथ भगवान के किए दर्शन, निर्माण कार्यों का अवलोकन कर की सराहना



सीकर. शाबाश इंडिया। वंडर सीमेंट एवं आरके मार्बल ग्रुप के चेयरमैन और उद्योगपति अशोक पाटनी मंगलवार को अपनी पत्नी श्राविकारत्न सुशीला पाटनी और संजय पापड़ीवाल के साथ श्री दिगंबर जैन भव्योदय अतिशय क्षेत्र रैवासा पहुंचे। यहां उन्होंने भूगर्भ से प्रकट अतिशयकारी भगवान 1008 सुमतिनाथ के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। समाज के विवेक पाटोदी ने बताया कि अशोक पाटनी अतिशय क्षेत्र रैवासा के परम संरक्षक और समाज के प्रमुख भामाशाहों में शामिल हैं। उनके आगमन पर प्रबंध समिति के अध्यक्ष महावीर ठोलिया, कार्यकारी अध्यक्ष देवेंद्र (बॉबी) छाबड़ा, महामंत्री सुनील बड़जात्या, निर्माण मंत्री पंकज छावड़ा दुधवा और संयुक्त मंत्री संजय बड़जात्या सहित प्रबंध समिति के सदस्यों ने पाटनी परिवार का स्वागत एवं अभिनंदन किया। अशोक पाटनी ने अतिशय क्षेत्र में चल रहे निर्माण एवं विकास कार्यों का अवलोकन किया और उनकी सराहना की। रैवासा आगमन से पूर्व उन्होंने सीकर में विराजमान वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं गज्जू भैया, अनुभव सेठी, पदम पिराका, अजीत जयपुरिया, संतोष बिनायक्या, राजकुमार सेठी (जयपुर), महेश बाकलीवाल, मोनू जयपुरिया, आनंद मोदी, अभिनव सेठी और नरेंद्र मोदी ने भी श्रेष्ठी परिवार का स्वागत किया।

अवधपुरी में धूमधाम से मनाया गोवर्धन पूजा एवं अन्नकूट महोत्सव

शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने विधि-विधान से किया गोवर्धन पूजन, विशाल अन्नकूट भंडारे में उमड़े श्रद्धालु



आगरा. शाबाश इंडिया। दीपावली पर्व के अवसर पर अवधपुरी, ज्वालापुरी में श्री सर्वजन विकास समिति के तत्वावधान में मंगलवार को सामूहिक गोवर्धन पूजा एवं अन्नकूट महोत्सव श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। धार्मिक आस्था, सामाजिक समरसता और आपसी भाईचारे के संदेश के साथ आयोजित इस महोत्सव में बड़ी संख्या में क्षेत्रीय श्रद्धालुओं और गणमान्य लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। आयोजन स्थल पर पहुंचने पर समिति सदस्यों ने उनका पुष्पमाला पहनाकर और स्मृति चिह्न भेंटकर स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस दौरान पूरा परिसर भगवान



गोवर्धन के जयकारों से गूंज उठा। महोत्सव का शुभारंभ सामूहिक सुंदरकांड पाठ के साथ हुआ। श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से पाठ कर परिवार, समाज और देश में सुख-शांति, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। इसके बाद मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने मंत्रोच्चार और विधि-विधान के साथ भगवान गोवर्धन का पूजन किया। उन्होंने क्षेत्र की सुख-समृद्धि और सर्वकल्याण की कामना की। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री ने गोवर्धन पूजा के धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी को पर्व की शुभकामनाएं दीं। श्री सर्वजन विकास समिति की ओर से उनका सम्मान किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय पार्षद मीनाक्षी वर्मा और संतोषी लाल भी मौजूद रहे। अतिथियों ने क्षेत्रवासियों को दीपावली एवं गोवर्धन पूजा की शुभकामनाएं दीं। महोत्सव के अंतर्गत भगवान गोवर्धन को विभिन्न प्रकार के पकवानों और व्यंजनों का भोग अर्पित किया गया। इसके बाद विशाल अन्नकूट महोत्सव एवं सामूहिक भंडारे का आयोजन हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। सुबह से ही आयोजन स्थल पर श्रद्धालुओं की आवाजाही बनी रही। बच्चों, युवाओं, महिलाओं और बुजुर्गों ने उत्साह के साथ धार्मिक कार्यक्रमों में सहभागिता की। समिति पदाधिकारियों ने कहा कि गोवर्धन पूजा हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का महत्वपूर्ण पर्व है। ऐसे सामूहिक आयोजन समाज के लोगों को एक सूत्र में जोड़ने के साथ आपसी प्रेम, भाईचारे और सद्भाव की भावना को मजबूत करते हैं। उन्होंने आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी श्रद्धालुओं और क्षेत्रवासियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर संजय शर्मा, भगवान सिंह शर्मा, एडवोकेट भगवान शर्मा, रामप्रकाश शर्मा, दिनेश पाराशर, आनंद शर्मा, मिंटू त्यागी, शुभम जैन, प्रीति त्यागी और भारत भूषण शर्मा सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

अजमेर संभाग में भक्तिभाव से मनाया भगवान महावीर स्वामी का 2552वां निर्वाण दिवस

मंदिरों और जिनालयों में हुआ अभिषेक, शांतिधारा व पूजन; 1008 दीपकों से की गई महाआरती





अजमेर. शाबाश इंडिया। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के संभाग महामंत्री कमल गंगवाल एवं संभाग संयोजक संजय कुमार जैन ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी का 2552वां निर्वाण दिवस देशभर के साथ अजमेर संभाग में भी हर्षोल्लास और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अजमेर संभाग के सभी जैन मंदिरों, नसियाजी एवं तीर्थस्थलों पर भगवान का नित्य नियम अभिषेक, शांतिधारा और पूजन किया गया। सभी जिनालयों में विशेष रोशनी एवं आकर्षक सजावट की गई। गंगवाल एवं जैन ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी की विशेष पूजा-अर्चना के साथ निर्वाण कांड का पाठ किया गया। इसके बाद श्रद्धालुओं ने भगवान महावीर स्वामी के श्रीचरणों में निर्वाण मोदक (लड्डू) समर्पित किए। इसके साथ ही गौतम गणधर स्वामी की भी विशेष पूजा-अर्चना की गई। रात्रि में 1008 दीपकों से भव्य महाआरती की गई। इस दौरान सभी जिनालय दीपों की रोशनी से जगमगा उठे। कार्यक्रम के समापन पर धर्मावलंबियों ने एक-दूसरे को दीपावली पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। **ब्यूरो चीफ : रोहित जैन**

धुलियान में भक्तिभाव से मनाया भगवान महावीर का 2553वां निर्वाण महोत्सव

निर्वाण लाडू अर्पित कर की पूजा-अर्चना, एक माह में 24 लाख से अधिक मंत्र जाप का लक्ष्य भी हुआ पूरा



धुलियान (मुर्शिदाबाद). शाबाश इंडिया। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में पवित्र गंगा नदी के तट पर स्थित श्री 1008 भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर में सोमवार, 9 नवंबर को भगवान महावीर स्वामी का 2553वां निर्वाण महोत्सव श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अभिषेक, शांतिधारा और पूजा-अर्चना के बाद भगवान महावीर के चरणों में निर्वाण लाडू अर्पित किया गया। मंदिर में आयोजित धार्मिक कार्यक्रमों में श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से भाग लिया। भगवान महावीर स्वामी ने जैन मान्यता के अनुसार पावापुरी के पद्म सरोवर में निर्वाण प्राप्त किया था। इसी स्मृति में प्रतिवर्ष उनका निर्वाण महोत्सव मनाया जाता है। मंदिर से जुड़े संजय कुमार जैन बड़जात्या ने बताया कि निर्वाण महोत्सव की तैयारियां एक माह पहले से ही शुरू कर दी गई थीं। मूलनायक भगवान महावीर स्वामी के मंदिर में शांतिधारा के पश्चात प्रतिदिन महावीर स्तोत्र का पाठ किया जाता था। इसके साथ ही निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में 9 अक्टूबर से 9 नवंबर तक 24 लाख से अधिक मंत्र जाप का लक्ष्य रखा गया था। समाज के सभी परिवारों ने इसमें सहभागिता का संकल्प लिया और सामूहिक प्रयास से लक्ष्य पूरा किया। दोपहर में मंदिर में महावीर चालीसा का पाठ हुआ। सायंकाल सामूहिक महाआरती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्थानीय परिवार अपने-अपने घरों से दीपक सजाकर मंदिर पहुंचे। दीपों से सजे मंदिर परिसर में भक्तिमय वातावरण के बीच सभी श्रद्धालुओं ने सामूहिक महाआरती का आनंद लिया। पूरे आयोजन में स्थानीय जैन समाज के परिवारों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई।

निःशुल्क मिर्गी रोग चिकित्सा शिविर में 99 मरीज हुए लाभान्वित

डॉ. आर.के. चंडक ने दी चिकित्सा सेवाएं, 5 नए मरीजों सहित सभी को वितरित की गई निःशुल्क दवाइयां



गुलाबपुरा. शाबाश इंडिया। श्री प्राज्ञ मिर्गी रोग निवारक समिति, गुलाबपुरा की ओर से मंगलवार, 10 नवंबर को संस्था परिसर में निःशुल्क मिर्गी रोग चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। शिविर में वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. आर.के. चंडक ने सेवाएं देते हुए कुल 99 मरीजों का उपचार एवं परामर्श किया। इनमें 5 नए मरीज भी शामिल रहे। सभी मरीजों को निःशुल्क दवाइयां वितरित की गईं। संस्था के मंत्री पदमचंद खटोड़ ने बताया कि समिति की ओर से नियमित रूप से आयोजित किए जा रहे इन शिविरों का उद्देश्य मिर्गी रोग से पीड़ित जरूरतमंद मरीजों को चिकित्सा परामर्श, उपचार और दवाइयां उपलब्ध कराना है। कार्यक्रम में सुरेश लोढ़ा ने अतिथियों का स्वागत किया, जबकि कोषाध्यक्ष राजेंद्र चोरड़िया ने आभार व्यक्त किया। शिविर के लाभार्थी पुखराज चौधरी और विमला चौधरी (अजमेर) रहे। लाभार्थी परिवार के विजय पोखरणा, पुष्पा पोखरणा, विनय पोखरणा, अभिलाषा पोखरणा और अनय पोखरणा ने सेवाएं प्रदान कीं। पुखराज चौधरी, विजय पोखरणा और विनय पोखरणा ने सभी मरीजों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की मंगलकामना की। शिविर में रामलाल ने मरीजों एवं उनके परिजनों को मिर्गी रोग से बचाव, योग और नियमित योगाभ्यास के महत्व की जानकारी दी। उन्होंने स्वस्थ जीवन के लिए योग को दिनचर्या में शामिल करने पर जोर दिया।

190 से अधिक लोगों ने प्राप्त की निःशुल्क भोजन सेवा

शिविर में आने वाले मरीजों और उनके परिजनों के लिए नवंबर माह में आयोजित होने वाले सभी शिविरों में निःशुल्क भोजन सेवा की व्यवस्था की गई है। यह सेवा लाभार्थी परिवार पुखराज चौधरी एवं विमला चौधरी (अजमेर) की ओर से उपलब्ध कराई जा रही है। इस भोजन सेवा का 190 से अधिक लोगों ने लाभ उठाया। शिविर में संस्था के मदनलाल लोढ़ा, मदनलाल रांका, सुरेश लोढ़ा, सुशील चौधरी, प्रेम पाडलेचा, दिनेश जोशी, दिलीप पाराशर, ज्ञान बाबेल, दिलीप विश्वकर्मा और राजेंद्र जायसवाल सहित अनेक गणमान्यजनों ने सेवाएं प्रदान कीं।

ब्यूरो चीफः
रोहित जैन

बहोरीबंद में मनाया भगवान महावीर का 2553वां निर्वाण महोत्सव, वीर निर्वाण नववर्ष का किया स्वागत

निर्ग्रन्थ सेंटर ऑफ आर्कियोलॉजी की जबलपुर सर्किल इकाई ने आयोजित किया कार्यक्रम, वीर निर्वाण संवत की ऐतिहासिक और पुरातात्विक पृष्ठभूमि पर हुई चर्चा

जबलपुर. शाबाश इंडिया

भगवान महावीर स्वामी के 2553वें निर्वाण महोत्सव एवं वीर निर्वाण नववर्ष के शुभारंभ के अवसर पर निर्ग्रन्थ सेंटर ऑफ आर्कियोलॉजी की जबलपुर सर्किल इकाई की ओर से बहोरीबंद में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर संस्था के सदस्यों ने दीपावली के पावन पर्व पर भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक का स्मरण किया और वीर निर्वाण नववर्ष का स्वागत करते हुए एक-दूसरे को मंगलमय शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में संस्था के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. यतीश जैन ने वीर निर्वाण संवत की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि जैन परंपरा के अनुसार भगवान महावीर का निर्वाण दीपावली के दिन हुआ था और इसी पावन तिथि से वीर निर्वाण संवत की गणना प्रारंभ मानी जाती है। इस दृष्टि से दीपावली केवल प्रकाश पर्व ही नहीं, बल्कि भगवान महावीर के निर्वाण की स्मृति और जैन समाज के नववर्ष का भी महत्वपूर्ण अवसर है।

दीपावली से जुड़ी है नई बही-खाते की परंपरा

डॉ. जैन ने बताया कि दीपावली के अवसर पर परंपरागत रूप से व्यापारिक प्रतिष्ठानों में नए बही-खाते खोलने, पुराने लेखों का समापन करने और नए व्यापारिक वर्ष का शुभारंभ करने की परंपरा रही है। व्यापारी वर्ग शुभ मुहूर्त में नवीन बही-खातों का पूजन कर नए वर्ष का लेखा-जोखा प्रारंभ करता है। यह परंपरा भारतीय समाज में दीपावली के ऐतिहासिक एवं आर्थिक महत्व को भी दशार्ती है।

बड़ली के प्राचीन शिलालेख का किया उल्लेख

डॉ. जैन ने राजस्थान के अजमेर जिले के बड़ली (वडाली) गांव से प्राप्त प्राचीन शिलालेख का उल्लेख करते हुए बताया कि ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण यह अभिलेख वीर निर्वाण कालगणना के ऐतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने वर्ष 1912 में इस शिलालेख की खोज की थी। अभिलेख में उत्कीर्ण 'वीराय भगवते' तथा 'चतुरासिति' शब्दों के आधार पर उन्होंने इसे भगवान महावीर के निर्वाण के 84वें वर्ष से संबंधित माना था। इस अभिलेख ने भगवान महावीर और प्राचीन भारतीय कालगणना के ऐतिहासिक अध्ययन को महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया है। उन्होंने कहा कि ऐसे पुरातात्विक साक्ष्यों के माध्यम से प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं को समझने का अवसर मिलता है। भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत,



अपरिग्रह एवं जीवदया के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। नववर्ष का वास्तविक उद्देश्य केवल उत्सव मनाना नहीं, बल्कि इन आदर्शों को जीवन में अपनाकर समाज में शांति, सद्भाव, नैतिकता और समरसता को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम में जबलपुर सर्किल इकाई के श्री कनिल जी, कपिल जैन, डॉ. ज्योति जैन, संगीता जैन, रचना जैन, सिंपल जैन, मालती जी, आदित्य जैन, राज जैन, अदिति जैन, कल्प जैन, कनिष्क और आयुष सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने एक-दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएं दीं और भगवान महावीर के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार के साथ प्राचीन ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक धरोहरों के संरक्षण का संकल्प व्यक्त किया। कार्यक्रम के माध्यम से वीर निर्वाण नववर्ष को धार्मिक आस्था, ऐतिहासिक गौरव, व्यापारिक परंपरा और सामाजिक समरसता के साथ मनाने का संदेश दिया गया।

गोवर्धन पूजा पर श्री बालाजी धाम में गूंजे रियासतकालीन भक्ताई भजन, लोक संस्कृति की बही बयार

ठाठर आमेर में पारंपरिक भक्ताई भजन मेले का आयोजन, लोक कलाकारों ने दी भावपूर्ण प्रस्तुतियां

आमेर/जयपुर. शाबाश इंडिया। गोवर्धन पूजा के पावन अवसर पर आमेर स्थित दक्षिणमुखी प्राचीन सिद्ध पीठ श्री बालाजी धाम, ठाठर आमेर में रियासतकालीन लोक कला 'भक्ताई भजन मेले' का भव्य आयोजन श्रद्धा और पारंपरिक उल्लास के साथ किया गया। तेली बावड़ी की ढाणी, ठाठर आमेर के लोक कला साधक भगत श्री बद्रीनारायण जी के संयोजन में आयोजित यह भक्तिमय कार्यक्रम श्री बालाजी धाम को समर्पित रहा। श्री बालाजी धाम के सेवक पुजारी श्री ओमप्रकाश सैनी ने बताया कि यह धाम क्षेत्र की जन-आस्था का प्रमुख केंद्र है। रियासतकाल से ही संकटमोचन हनुमान जी के इस दक्षिणमुखी स्वरूप को भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करने और कष्ट हरने वाला सिद्ध धाम माना जाता रहा है। गोवर्धन पूजा के अवसर पर लोक कला के माध्यम से प्रभु के चरणों में भक्ति निवेदित करने की परंपरा भी लंबे समय से चली आ रही है।

ढूंढाड़ और आमेर की सांस्कृतिक पहचान है भक्ताई

ओमप्रकाश सैनी ने भक्ताई लोक कला की ऐतिहासिकता और महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वे स्वयं भक्ताई लोक कला साधक परिवार की परंपरा से जुड़े हैं। वे रंगमंच कलाकार होने के साथ 'नाटकवाला कला मंच, आमेर' के संस्थापक-निदेशक भी हैं। उन्होंने कहा कि भक्ताई केवल गायन की विधा नहीं, बल्कि ढूंढाड़ और आमेर रियासत की सांस्कृतिक पहचान है। रियासतकाल में राजा-महाराजाओं के समय से ही यह कला धार्मिक चेतना, पौराणिक कथाओं और लोक आस्था के प्रसार का माध्यम रही है। इस कला में झांझ-मंजीरा, तबला-कुंडी और कांसे के थाल जैसे पारंपरिक लोक वाद्यों की थाप पर चौपाइयां और पद प्रस्तुत किए जाते हैं। शास्त्रीय एवं लोक धुनों के संगम से सजी इन प्रस्तुतियों में कृत्रिम साज-सज्जा के बजाय पारंपरिक गायन शैली को महत्व दिया जाता है। यह कला पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा के रूप में आगे बढ़ती रही है। इसका संरक्षण हमारी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। भजन मेले में सहयोगी भगत मंडली के वरिष्ठ



साधकों और कलाकारों ने भक्ताई शैली में भगवान श्रीराम, वीर हनुमान, कुलदेवी बांकी माताजी रायसर, शीला माताजी आमेर, भैरूजी महाराज और भगवान श्रीकृष्ण की गोवर्धन लीला से जुड़े पारंपरिक पदों की संगीतमय प्रस्तुतियां दीं। झांझ, तबला-कुंडी और थाल की गूंज के बीच प्रस्तुत भजनों ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। इस अवसर पर सहयोगी भगत मंडली के सदस्यों एवं गणमान्य लोगों में श्री गोपाल सैनी, श्री रत्नलाल सैनी, श्री हनुमान सैनी (दयाला), श्री छोटी लाल (बेरीकाला), श्री प्रभुलाल सैनी, श्री लालाराम (कंजारा), श्री लालाराम सैनी (सिंघी जी का बाग), श्री



कानाराम सैनी (खेताका) और श्री नंछू जी (लेड़किया की ढाणी) सहित तेली बावड़ी की ढाणी एवं आसपास के क्षेत्रों के नागरिक और श्रद्धालु उपस्थित रहे।

गायत्री नगर जैन मंदिर में भक्तिभाव से मनाया भगवान महावीर का 2553वां निर्वाण महोत्सव

दो सत्रों में समर्पित किए गए निर्वाण लाडू, शाम को हुई सामूहिक आरती और दीप अर्चना



जयपुर. शाबाश इंडिया। वर्तमान चौबीसी के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2553वां निर्वाण (मोक्ष) महोत्सव 9 नवंबर को जयपुर महानगर के विभिन्न जिनालयों में श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर महारानी फार्म स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर, गायत्री नगर में मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष अरुण शाह के नेतृत्व में दो सत्रों में निर्वाण लाडू समर्पित किए गए। जैन समाज की प्रचार-प्रसार समिति के संयोजक उदयभान जैन बड़जात्या ने बताया कि मंदिर प्रबंध समिति के तत्वावधान में विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ निर्वाण महोत्सव मनाया गया। सुबह भगवान के अभिषेक और शांतिधारा के बाद सामूहिक पूजन किया गया। इसके पश्चात निर्वाण कांड का पाठ हुआ। प्रथम सत्र में सुबह 7:30 बजे निर्वाण लाडू समर्पित करने



का सौभाग्य लाजपत-सरोज जैन, डॉ. ललित-कृपा मानस और हर्ष जैन रघुविहार परिवार को प्राप्त हुआ। इसके बाद सुबह 8:30 बजे द्वितीय सत्र में भी निर्वाण लाडू समर्पित किया गया। सभी मांगलिक क्रियाएं विधानाचार्य पंडित अजीत शास्त्री, गायत्री नगर ने संपन्न कराईं। इस अवसर पर जैन समाज के श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और भगवान के चरणों में निर्वाण लाडू समर्पित किए। मंदिर प्रबंध समिति की ओर से प्रथम अभिषेककर्ता, शांतिधारा करने वाले तथा निर्वाण लाडू समर्पित करने वाले लाजपत जैन (शिखरजी वाले) परिवार का सम्मान किया गया। सायंकाल सामूहिक आरती एवं दीप अर्चना का कार्यक्रम उल्लास और उत्साह के साथ संपन्न हुआ। मंदिर प्रबंध समिति के मंत्री राजेश बोहरा एवं संजय ठोलिया ने सभी श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया।

हर मास एक उपवास से जागृत होती है आत्मशक्ति, आत्मसंयम और आध्यात्मिक चेतना : अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागरजी

उपवास केवल भोजन का त्याग नहीं, बल्कि कुविचारों से दूरी बनाकर आत्मा के निकट पहुंचने का सशक्त माध्यम है...



सोनकच्छ (पुष्पगिरी तीर्थ). शाबाश इंडिया। परम पूज्य पुष्पगिरी तीर्थ प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में व्रत चक्रवर्ती पट्टविभूषण अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय श्री पीयूष सागरजी महाराज ससंघ पुष्पगिरी तीर्थ में वर्षायोग हेतु विराजमान हैं। वर्षायोग के दौरान प्रतिदिन विभिन्न धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी श्रृंखला में गुरु सान्निध्य में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने उपवास के आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हर मास एक उपवास आत्मकल्याण, आत्मसंयम और आत्मशक्ति जागृत करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। आचार्य श्री ने कहा कि दुनिया के लगभग हर धर्म और संस्कृति में उपवास को ईश्वर से जुड़ने और आत्मनियंत्रण प्राप्त करने का सशक्त माध्यम माना गया है। हमारी इंद्रियां प्रायः बाहरी सुखों, स्वाद और भोग-विलास की ओर आकर्षित होती हैं। उपवास के माध्यम से मनुष्य अपनी प्रबल इच्छाओं पर नियंत्रण करना सीखता है। जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं पर विजय प्राप्त करता है, तब उसके भीतर आत्मबल और इच्छाशक्ति का संचार होता है।

आत्मा के निकट रहने का माध्यम है उपवास

उपवास शब्द की आध्यात्मिक व्याख्या करते हुए आचार्य श्री ने कहा कि 'उप' का अर्थ है पास और 'वास' का अर्थ है रहना। इस प्रकार उपवास का अर्थ है अपने पास, अर्थात अपनी आत्मा के निकट रहना। भोजन की चिंता से मुक्त होकर बचाए गए समय को जप, तप, ध्यान और स्वाध्याय में लगाना ही उपवास की वास्तविक सार्थकता है। उपवास आत्मा के शुद्ध स्वरूप और उसके गुणों का साक्षात्कार कराने वाला श्रेष्ठ मार्ग है। आचार्य श्री ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से उपवास की महत्ता समझाते हुए कहा कि उपवास वह वैद्य है, जो तन और मन को निरोगी बनाने की प्रेरणा देता है। यह वह सारथी है, जो आत्मारूपी रथ के इंद्रिय और मन रूपी घोड़ों को नियंत्रित रखता है। उपवास वह सेतु है, जो आत्मा और परमात्मा के बीच की दूरी मिटाने का मार्ग प्रशस्त करता है। उन्होंने आगे कहा कि उपवास वह हंस है, जो आत्मा और शरीर के बीच नीर-क्षीर विवेक अर्थात भेद-विज्ञान कराता है। यह वह पैनी छैनी है, जो कर्मों के आवरण हटाकर आत्मा के शुद्ध स्वरूप को प्रकट करने में सहायक बनती है।

विचारों की शुद्धि भी है उपवास का उद्देश्य

आचार्य श्री ने विशेष रूप से कहा कि उपवास का अर्थ केवल पेट खाली रखना नहीं है, बल्कि विचारों को शुद्ध करना, कुविचारों से दूर रहना, क्रोध और ईर्ष्या पर नियंत्रण रखना तथा सात्विक जीवन जीने का संकल्प लेना भी है। यदि उपवास के दौरान मन में क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष बना रहता है, तो वह केवल लंघन है, वास्तविक उपवास नहीं। उन्होंने श्रद्धालुओं को प्रेरित करते हुए कहा कि उपवास को केवल धार्मिक परंपरा या कर्मकांड तक सीमित न रखें, बल्कि इसे आत्मशुद्धि, आत्मनिरीक्षण और आत्मविकास का माध्यम बनाएं। नियमित रूप से संयम और साधना का अभ्यास जीवन को नई दिशा दे सकता है। आचार्य श्री का संदेश है कि 'हर मास एक उपवास' का संकल्प लेकर व्यक्ति केवल भोजन पर ही नहीं, बल्कि अपनी इच्छाओं, विचारों और इंद्रियों पर भी नियंत्रण करना सीखे। यही उपवास की वास्तविक साधना और आत्मकल्याण का मार्ग है। इस संबंध में जानकारी सकल जैन समाज के प्रचार-प्रसार संयोजक नरेंद्र अजमेरा एवं पीयूष कासलीवाल, औरंगाबाद ने दी।



जनकपुरी में गुरु-सान्निध्य में हुआ जैन नववर्ष का मंगलारंभ

वीर निर्वाण संवत् 2553 पर आचार्य आदित्य सागरजी महाराज का मिला मंगल आशीर्वाद, कई परिवारों ने नवधाभक्तिपूर्वक कराया आहारदान

जयपुर (जनकपुरी). शाबाश इंडिया

जैन नववर्ष एवं वीर निर्वाण संवत 2553 के पावन शुभारंभ पर जनकपुरी में आध्यात्मिक उल्लास और भक्ति का वातावरण रहा। इस अवसर पर परम पूज्य आचार्य श्री 108 आदित्य सागरजी महाराज का मंगल सान्निध्य और आशीर्वाद प्राप्त कर श्रद्धालु परिवारों ने स्वयं को धन्य अनुभव किया। इस पावन अवसर पर पदम जैन बिलाला परिवार सहित सुनील जैन सेठी, राकेश जैन दूरदर्शन, सोभाग अजमेरा, अनिता बिंदायक्या, जिनेंद्र जैन श्रीमाल, ज्ञानचंद भोंच, महावीर कीर्ति नगर, कांता पाटनी और ललित गोधा आदि परिवारों को आचार्य श्री आदित्य सागरजी महाराज को नवधाभक्तिपूर्वक आहारदान कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जैन दर्शन में आहारदान को मुनिराजों की साधना के प्रति विनय, भक्ति और श्रावक के उत्कृष्ट कर्तव्य का प्रतीक माना गया है। आचार्य श्री के चरणों में श्रद्धापूर्वक नमोस्तु निवेदित कर पदम जैन बिलाला परिवार के पारस बिलाला, पहुप, दीपिका जैन, आदि श्री, आदिश, आदित और आदिवा सहित परिवारजनों ने मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। नववर्ष के प्रथम दिवस पर गुरु-वंदना, साधु सेवा और आहारदान के पुण्ययोग ने इस अवसर को परिवार के लिए चिरस्मरणीय बना दिया। नववर्ष के अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने एक-दूसरे का अभिनंदन कर मंगलमय वर्ष की शुभकामनाएं दीं।





आशादीप ग्रीन्स कॉलोनी में दीपोत्सव की धूम, प्रतियोगिताओं और ग्रीन पटाखों के साथ मनाई यादगार दिवाली

जयपुर. शाबाश इंडिया

सामूहिक लक्ष्मी पूजन से हुआ उत्सव का शुभारंभ, रंगोली, वेशभूषा और पकवान प्रतियोगिताओं में दिखा कॉलोनीवासियों का उत्साह

सांगानेर मेन वाटिका रोड स्थित आशादीप ग्रीन्स कॉलोनी में इस वर्ष दीपावली का पंचदिवसीय पर्व हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाया गया। उत्सव की शुरूआत सामूहिक लक्ष्मी पूजन एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुई। सजे-धजे घरों, झिलमिलाती रोशनी और पर्यावरण अनुकूल व्यवस्थाओं के बीच कॉलोनीवासियों ने मिलकर दीपावली का पर्व मनाया। लोगों ने एक-दूसरे को शुभकामनाएं दीं और मिठाइयां बांटकर खुशियां साझा कीं। उत्सव के दौरान बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी में खासा उत्साह देखने को मिला। कॉलोनीवासी पारंपरिक, सुंदर और रंग-बिरंगे परिधानों में नजर आए।



प्रतियोगिताओं में दिखी प्रतिभा और रचनात्मकता

दीपोत्सव के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें कॉलोनीवासियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इनमें वेशभूषा, बेस्ट कपल, रंगोली, हाउस डेकोरेशन, दीया एवं माला सजावट प्रतियोगिताएं शामिल रहीं। बच्चों के लिए फैंसी ड्रेस, मेहंदी और चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। चित्रकला प्रतियोगिता में बच्चों ने भगवान श्रीराम, माता सीता, माता लक्ष्मी और भगवान गणेश के सुंदर चित्र बनाए। वहीं, बेस्ट मिठाई एवं पकवान प्रतियोगिता में महिलाओं ने विभिन्न स्वादिष्ट व्यंजन तैयार किए, जिनका उपस्थित लोगों ने आनंद लिया।

ग्रीन पटाखों के साथ मनाया उत्सव

पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखते हुए ग्रीन पटाखे चलाए गए और सभी ने आतिशबाजी का आनंद लिया। प्रतियोगिताओं के समापन पर विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके बाद सामूहिक भोज का आयोजन हुआ। कॉलोनीवासियों ने एक-दूसरे के साथ यादगार तस्वीरें खिंचवाकर दीपावली के इन खुशनुमा पलों को कैमरे में संजोया। कार्यक्रम में प्रोफेसर डॉ. राजीव सक्सेना, प्रेम सिंह गुर्जर, बालकिशन, ऋषि गुप्ता, हनुमान सिंह, अनुज जैन, राजेंद्र शर्मा, संगीता सक्सेना, नीता, ज्योति, ममता शर्मा, आभा, गीता, रिचा, मीमांसा, भावना, तनु, रामरती, वैष्णवी सहित बड़ी संख्या में कॉलोनीवासी उपस्थित रहे। सभी के सहयोग और सहभागिता से दीपोत्सव यादगार बन गया।

दक्षिण भारतीय थीम पर सजा दीपोत्सव-2026, दिगंबर जैन सोशल ग्रुप 'सिटी' का आयोजन बना यादगार

200 से अधिक सदस्यों ने लिया हिस्सा, पारंपरिक वेशभूषा, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, कपल गेम्स और दक्षिण भारतीय व्यंजनों ने बांधा समां



भिंड. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप 'सिटी', भिंड की ओर से दीपोत्सव-2026 का भव्य एवं आनंदमय आयोजन 10 नवंबर को श्री दिगंबर जैन कीर्ति स्तंभ मंदिर परिसर, लश्कर रोड, भिंड में किया गया। इस वर्ष आयोजन की विशेष थीम दक्षिण भारतीय संस्कृति पर आधारित रही। कार्यक्रम में 200 से अधिक सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की और इसे यादगार पारिवारिक उत्सव का स्वरूप दिया। दक्षिण भारतीय पारंपरिक वेशभूषा, लुंगी-गमछा, आकर्षक सजावट और सांस्कृतिक परिवेश ने आयोजन स्थल को दक्षिण भारत की रंगीन छटा से सराबोर कर दिया।

दीप प्रज्वलन और मंगलाचरण से हुआ शुभारंभ

कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान जिनेंद्र के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। दीप प्रज्वलन श्री विकास शैली जैन ने किया। भगवान जिनेंद्र के चित्र का अनावरण श्री पारस सेरिल जैन एवं महिला विंग 'सखी' की सदस्यों ने किया। मंगलाचरण की सुमधुर प्रस्तुति श्रीमती प्रेक्षा मुकेश जैन एवं श्रीमती पूनम शैलेंद्र जैन ने दी। वहीं, कुमारी दर्शी अंशुल-आयशा जैन ने अपनी सुंदर प्रस्तुति से कार्यक्रम में भक्तिमय वातावरण बना दिया।

निवाई में आचार्य सुंदर सागरजी महाराज ससंघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह संपन्न

20 दिगंबर जैन साधु-साध्वियों की पिच्छिकाएं बदलीं, श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से किया आयोजन



निवाई. शाबाश इंडिया। सकल दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में आचार्य श्री सुंदर सागरजी महाराज ससंघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ आयोजित किया गया। समारोह में सैकड़ों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में 20 दिगंबर जैन साधु-साध्वियों की पिच्छिकाओं का परिवर्तन किया गया। चातुर्मास कमेटी के मीडिया प्रभारी विमल जौंला एवं सुनील भाणजा ने बताया कि समारोह का शुभारंभ बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण के साथ हुआ। इस दौरान आचार्य श्री सुंदर सागरजी महाराज ससंघ में विराजमान सभी साधु-साध्वियों को निवाई के श्रद्धालुओं ने नवीन पिच्छिकाएं भेंट कीं। वहीं, आचार्य श्री के माध्यम से श्रद्धालुओं को पुरानी पिच्छिकाएं प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। इस अवसर पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य सुंदर सागरजी महाराज ने कहा कि पिच्छिका दिगंबर जैन संतों के संयम का महत्वपूर्ण उपकरण है। जैन धर्म के अनुसार दिगंबर जैन साधुओं के पास संयम के उपकरण के रूप में पिच्छी और कमंडलु होते हैं। पिच्छिका का उपयोग सूक्ष्म जीवों की रक्षा के भाव से किया जाता है। उन्होंने कहा कि दिगंबर साधु वही बन सकता है, जो अपने भीतर निर्मल भाव जागृत करता है। मौन बहुत बड़ी तपस्या है। यदि इसका उपयोग आत्मसाधना के लिए किया जाए तो साधना के कई सोपान सहज ही पूर्ण हो जाते हैं। आचार्य श्री ने कहा कि साधना में रत साधुजनों के वचनों का प्रभाव ऐसा होना चाहिए कि उन्हें सुनकर मनुष्य के हृदय की वेदना शांत हो जाए। व्यक्ति संसार के मार्ग से हटकर व्यसन और कषायों के दलदल से बाहर निकले तथा मोक्ष मार्ग पर अग्रसर होकर सत्य का पथिक बने।

हर परिस्थिति में पति-पत्नी एक-दूसरे का सहारा बनें: आर्यिका विजिज्ञासाश्री माताजी



जैन दंपती संस्कार शिविर में 101 दंपतियों ने लिए सप्तवचन, वैवाहिक जीवन में आपसी समझ और सामंजस्य बनाए रखने का दिया संदेश

भिंड. शाबाश इंडिया। जीवन में कितनी भी विषम परिस्थितियां, कष्ट या दुख आएं, पति-पत्नी को हर हाल में एक-दूसरे का साथ देना चाहिए। छोटी-छोटी बातों को अहंकार का विषय बनाने से परिवारों में विवाद बढ़ते हैं और कई बार रिश्ते टूटने की स्थिति तक पहुंच जाते हैं। इसलिए दांपत्य जीवन में प्रेम, विश्वास और आपसी सामंजस्य बनाए रखना जरूरी है। यह विचार आर्यिका विजिज्ञासाश्री माताजी ने ऋषभ सत्संग भवन, भिंड में आयोजित जैन दंपती संस्कार शिविर में व्यक्त किए। आर्यिका विजिज्ञासाश्री माताजी के ससंघ सान्निध्य में आयोजित इस शिविर में 101 दंपतियों ने भाग लिया और सप्तवचनों का पालन जीवनभर करने का संकल्प लिया।

पाणिग्रहण संस्कार से जुड़ी हैं वैवाहिक परंपराएं

इस अवसर पर आर्यिका माताजी ने दंपतियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा समाज संस्कारित समाज है। भारतीय परंपरा में महिला और पुरुष को पति-पत्नी के रूप में वैवाहिक जीवन में प्रवेश करने से पहले विभिन्न संस्कारों और परंपराओं से जोड़ा जाता है। विवाह की इस पवित्र प्रक्रिया को पाणिग्रहण संस्कार कहा जाता है। उन्होंने कहा कि दंपतियों को जीवन के अंतिम समय तक इस पाणिग्रहण संस्कार की गरिमा बनाए रखनी चाहिए और विवाह के समय लिए गए सप्तवचनों का पूरी निष्ठा से पालन करना चाहिए। घर-परिवार की छोटी-छोटी बातों को अहंकार का विषय बनाने के बजाय आपसी समझ और सामंजस्य से जीवन व्यतीत करना चाहिए। इसी में परिवार, समाज और रिश्तों की भलाई है।

छोटी-छोटी बातों को विवाद का कारण न बनाएं

आर्यिका माताजी ने कहा कि वर्तमान समय में छोटी-छोटी बातों को लेकर पति-पत्नी के बीच विवाद और अहंकार की भावना बढ़ रही है। इसके कारण घरेलू कलह, हिंसा और उत्पीड़न जैसी समस्याएं सामने आती हैं। कई बार ये विवाद गंभीर रूप ले लेते हैं और रिश्ते टूटने के साथ परिवारों को भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि थोड़ी-सी नासमझी के कारण घर-परिवार और रिश्तों में दरार आ जाती है। इसलिए पति-पत्नी को एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए और कठिन परिस्थितियों में भी एक-दूसरे का सहारा बनना चाहिए। जीवन में प्रेम, विश्वास, धैर्य और सामंजस्य बनाए रखना ही सुखी दांपत्य जीवन का आधार है। कार्यक्रम को सफल बनाने में आदिनाथ दिगंबर जैन चैत्यालय मंदिर कमेटी, भिंड के साथ रविसेन जैन नेताजी, अशोक जैन महामाया, प्रवीण जैन किराना, ऋषभ अड़ोखर, राकेश जैन, शैलू जैन एलआईसी, नीतेश जैन, अमित जैन, जितेंद्र जैन, ऋषि जैन, मुकेश जैन एडवोकेट और चक्रेश जैन सहित अनेक लोगों का सहयोग रहा।

महेश नगर जैन मंदिर में मुनिश्री विशाल सागरजी का भव्य मंगल प्रवेश, जयकारों से गूंजा क्षेत्र

ढोल-नगाड़ों और पुष्पवर्षा से किया स्वागत, जिनचैत्य एवं दीपार्चना के आयोजन में उमड़े श्रद्धालु

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री 1008 महावीर दिगंबर जैन मंदिर, महेश नगर में धर्म प्रभावना का पावन अवसर उस समय देखने को मिला, जब परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशद सागरजी महाराज के मंगल आशीर्वाद से उनके संघस्थ मुनिश्री विशाल सागरजी महाराज का प्रातः महेश नगर में भव्य मंगल आगमन हुआ। मुनिश्री के मंदिर पहुंचने पर सकल दिगंबर जैन समाज, महेश नगर की ओर से ढोल-नगाड़ों, पुष्पवर्षा और जयकारों के साथ भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। पूरा क्षेत्र 'जय जिनेंद्र' और भगवान महावीर के जयकारों से गुंजायमान हो उठा। श्रद्धालुओं ने मुनिश्री के चरणों में श्रीफल अर्पित कर उनका मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। इस पावन अवसर पर मंगल प्रवेश, श्री नेमिनाथ जिनचैत्य एवं दीपार्चना के धार्मिक आयोजन किए गए। इसके पश्चात मुनिश्री की आहारचर्या संपन्न हुई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में धमार्नुरागी श्रद्धालुओं एवं मातृशक्ति ने उपस्थित होकर मुनिश्री के दर्शन और सान्निध्य का लाभ लिया। इस अवसर पर महेंद्र शाह, महेंद्र सेठी, नवल जैन, महेंद्र सोगानी, सुरेंद्र सोगानी, पीयूष जैन एवं पदम जैन सहित समाज के अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजक राकेश एवं प्रीति भोषा परिवार ने आयोजन में सहयोग देने वाले सभी समाजबंधुओं, श्रद्धालुओं और धर्मप्रेमियों का आभार व्यक्त किया। मुनिश्री के मंगल आगमन से महेश नगर जैन समाज में विशेष उत्साह और भक्तिमय वातावरण देखने को मिला।



पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में 14-15 नवंबर को मनेगा वार्षिक उत्सव

नौफणी पार्श्वनाथ भगवान का अभिषेक कर वार्षिक उत्सव के आमंत्रण पत्र का किया विमोचन



जयपुर. शाबाश इंडिया। पुरानी टोंक स्थित पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर (श्याम बाबा) में 14 और 15 नवंबर को दो दिवसीय वार्षिक उत्सव भक्तिभाव एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। उत्सव की तैयारियों के तहत बुधवार को मंदिर में धार्मिक आयोजन किए गए। इस दौरान नौफणी पार्श्वनाथ भगवान का अभिषेक कर वार्षिक उत्सव के आमंत्रण पत्र का विमोचन किया गया। प्रवक्ता राजेश अरिहंत ने बताया कि एक वर्ष पूर्व पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, पुरानी टोंक में परम पूज्य आचार्य गुरुवर वर्धमान सागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित हुआ था। इसी महोत्सव में प्रतिष्ठित विशाल नौफणी पार्श्वनाथ भगवान का वार्षिक उत्सव 14 और 15 नवंबर को धूमधाम से मनाया जाएगा। बुधवार सुबह क्षीरसागर से जल लाकर पार्श्वनाथ स्वामी, शांतिनाथ स्वामी, आदिनाथ स्वामी और महावीर स्वामी का जलाभिषेक किया गया। इसके बाद वृहद शांतिधारा संपन्न हुई। तत्पश्चात नित्य नियम पूजा, शांतिनाथ स्वामी की पूजा, महावीर स्वामी की पूजा और 24 भगवान की पूजा-अर्चना कर अर्घ्य एवं श्रीफल समर्पित किए गए। धार्मिक आयोजन के दौरान वार्षिक उत्सव का आमंत्रण पत्र भगवान पार्श्वनाथ के श्रीचरणों में अर्पित कर मंगल आशीर्वाद लिया गया। इसके बाद उपस्थित श्रद्धालुओं ने मंदिर में आयोजित होने वाले वार्षिक उत्सव के आमंत्रण पत्र का विमोचन किया। इस अवसर पर संजय, अनिल, अशोक, पदम, चेतन, प्रेमचंद, राकेश, संजू, रिंकू, संतोष, सीमा, मंजू, पायल, रीटा और उर्मिला सहित टोंक शहर की विभिन्न कॉलोनियों से आए श्रद्धालु उपस्थित रहे। सायंकाल समाज के विभिन्न परिवारों में आमंत्रण पत्र वितरित किए गए। साथ ही सभी समाजबंधुओं से वार्षिक उत्सव में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने का अनुरोध किया गया।

पारस विहार जैन मंदिर में भक्तिभाव से मनाया भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव





24 निर्वाण लाडू किए समर्पित, मुनि विश्व विजय सागरजी महाराज का पिच्छिका परिवर्तन समारोह भी हुआ

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुहाना मंडी स्थित चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, पारस विहार में परम पूज्य गणाचार्य 108 श्री विराग सागरजी महाराज एवं पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य, सरल स्वभावी एवं महातपस्वी मुनि श्री विश्व विजय सागरजी महाराज के सान्निध्य में 9 नवंबर 2026 को भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भक्तिभाव के साथ मनाया गया। मंदिर अध्यक्ष पवन गोदिका ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य निर्वाण लाडू के साथ 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी को 24 निर्वाण लाडू अर्पित किए गए। इस दौरान निर्वाण महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। मुख्य निर्वाण लाडू के पुण्यार्जक राजस्थान जैन सभा के सहसचिव श्री आर.के. जैन एवं महिमा जैन परिवार रहे। 24 निर्वाण लाडुओं के पुण्यार्जक परिवारों में राकेश मंगल, रमेश जैन (मुहाना), धर्मेंद्र गोदिका, वीरेंद्र सेठी, संतोष बगड़ा, नरेश अजमेरा, दिनेश पांड्या, राजेंद्र बैद, अरविंद टोंग्या, सुरेश लुहाड़िया, अनिल लुहाड़िया, अरविंद कौशिक, अनुराज शास्त्री, सुमित बड़जात्या, मनोज-प्रीति, राजकुमार (घर आंगन), अशोक अजमेरा, सत्यनारायण जैन, इंद्र कुमार जैन, पदमचंद शाह, आशीष-श्रेय पाटनी, अरविंद कोशिक, प्रदीप जैन (आगरा वाले), सुदेश गोदिका, हिमांशु-अमन जैन एवं सुभाष-रेनू सेठी परिवार शामिल रहे। धर्मेंद्र गोदिका ने बताया कि निर्वाण महोत्सव के पश्चात मुनि श्री विश्व विजय सागरजी महाराज का पिच्छिका परिवर्तन समारोह हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम में आचार्य विराग सागरजी महाराज के चित्र का अनावरण सत्यनारायण जैन परिवार ने किया।



दीप प्रज्वलन रमेश जैन (मुहाना) परिवार ने किया, जबकि शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य नरेश अजमेरा परिवार को प्राप्त हुआ। पाद प्रक्षालन पवन एवं प्रतीक गोदिका परिवार ने किया। कोषाध्यक्ष वीरेंद्र के. सेठी ने बताया कि समारोह के दौरान समाजबंधुओं ने मुनिश्री की भक्तिभाव से पूजा-अर्चना की। इसके बाद पवन एवं प्रतीक गोदिका परिवार ने मुनि श्री विश्व विजय सागरजी महाराज को नवीन पिच्छिका अर्पित की। मुनिश्री की पुरानी पिच्छिका प्राप्त करने का सौभाग्य मंदिर प्रबंध समिति के सदस्य परिवार को मिला। कार्यक्रम के समापन पर मंदिर प्रांगण में सभी साधर्मी बंधुओं ने अल्पाहार किया और दीपावली स्नेह मिलन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया।

गंगा माता मंदिर में भव्य अन्नकूट महोत्सव एवं स्वजातीय पार्षद सम्मान समारोह आयोजित





गंगा माता की पूजा-अर्चना और भोग आरती के बाद बांटी गई प्रसादी, निर्वाचित पार्षदों का अंगवस्त्र पहनाकर किया सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया

स्टेशन रोड स्थित श्री खंडेलवाल वैश्य जातीय गंगा माता मंदिर में सोमवार, 9 नवंबर 2026 को भव्य अन्नकूट महोत्सव एवं स्वजातीय पार्षद सम्मान समारोह श्रद्धा, भक्ति और हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। सायंकाल 5 बजे गंगा माता को भोग अर्पित कर आरती की गई। इसके बाद अन्नकूट महोत्सव में बड़ी संख्या में समाजबंधुओं ने शामिल होकर गंगा माता का आशीर्वाद प्राप्त किया और अन्नकूट प्रसादी ग्रहण की।

स्वजातीय पार्षदों का किया सम्मान

इस अवसर पर आयोजित स्वजातीय पार्षद सम्मान समारोह में समाज के निर्वाचित पार्षदों का सम्मान किया गया। श्री खंडेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा, जयपुर के संरक्षक श्री चंद्रमोहन बटवाड़ा ने अतिथियों एवं समाजबंधुओं का स्वागत किया। हितकारिणी सभा के अध्यक्ष श्री ज्ञान खंडेलवाल एवं कार्यकारी अध्यक्ष श्री विशंभर खंडेलवाल ने स्वजातीय पार्षदों, कार्यक्रम के सहयोगियों तथा समाज के गणमान्य लोगों को अंगवस्त्र पहनाकर सम्मानित किया। उन्होंने समाज के गौरव और सामाजिक एकता को बनाए रखने का संदेश दिया। आयोजकों के अनुसार, कार्यक्रम में स्वजातीय एवं सर्वजातीय समाज के लगभग 15,000 लोगों ने अन्नकूट प्रसादी ग्रहण की। हितकारिणी सभा, जयपुर के कार्यवाहक प्रधानमंत्री श्री दिनेश नाटाणी ने मंच का सुव्यवस्थित संचालन किया।

सहयोगियों के प्रति जताया आभार

कार्यक्रम के अंत में श्री खंडेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री विशंभर खंडेलवाल ने अतिथियों, सम्मानित पार्षदों, समाजबंधुओं और आयोजन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि हितकारिणी सभा एवं उसके अंतर्गत आने वाली विभिन्न समितियों के पदाधिकारियों, सहयोगियों, कार्यकर्ताओं और समाजबंधुओं के समर्पण, सहयोग एवं अथक परिश्रम से ही यह आयोजन सफल और यादगार बन सका। उन्होंने सभी सहयोगियों को सफल आयोजन के लिए बधाई दी।

जैन पाठशाला के बच्चों ने ली पटाखे नहीं चलाने की शपथ, दिया अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण का संदेश

श्री आदिनाथ जैन मंदिर में बच्चों को जीवदया और संस्कारों की दी शिक्षा, अल्पाहार एवं पुरस्कार भी वितरित



नौगामा (बांसवाड़ा). शाबाश इंडिया। जैन धर्म के मूल सिद्धांत ''अहिंसा परमो धर्मः'' को जीवन में अपनाने का संदेश देते हुए नौगामा की जैन पाठशाला के बच्चों ने पटाखे नहीं चलाने की सामूहिक शपथ ली। बच्चों ने जीव रक्षा, पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण मुक्त त्योहार मनाने का संकल्प व्यक्त किया। श्री आदिनाथ जैन मंदिर में मनीषा नानावटी एवं कुसुमलता नानावटी के मार्गदर्शन में आयोजित पाठशाला के दौरान बच्चों को धार्मिक संस्कारों के साथ जीवदया और पर्यावरण संरक्षण का महत्व समझाया गया। इस अवसर पर पूजा-अर्चना एवं संगीतमय भक्ति के माध्यम से बच्चों को जैन धर्म के सिद्धांतों से परिचित कराया गया। पाठशाला में बच्चों को बताया गया कि पटाखों से वायु एवं ध्वनि प्रदूषण होता है, जिससे मनुष्यों के साथ पशु-पक्षियों और अन्य जीवों को भी परेशानी होती है। बच्चों ने पटाखों से दूर रहकर त्योहारों को शांतिपूर्ण, सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल तरीके से मनाने का संकल्प लिया। इस दौरान बच्चों को अहिंसा, जीवदया और प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का संदेश देते हुए धार्मिक एवं सामाजिक मूल्यों को दैनिक जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में विनेश जैन की ओर से जन्मदिन के उपलक्ष्य में पाठशाला के बच्चों को अल्पाहार एवं पुरस्कार वितरित किए गए। बच्चों ने उत्साहपूर्वक धार्मिक गतिविधियों में भाग लिया। **रिपोर्ट : सुरेश चंद्र गांधी, नौगामा (बांसवाड़ा)**

लक्ष्मीनारायण मंदिर में अन्नकूट प्रसादी का किया वितरण, श्रद्धालुओं ने ग्रहण कर पाया धर्मलाभ

नया मंदिर परिवार की ओर से हुआ आयोजन, बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने ग्रहण की प्रसादी



नसीराबाद. शाबाश इंडिया। सदर बाजार स्थित लक्ष्मीनारायण मंदिर में नया मंदिर परिवार की ओर से श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ अन्नकूट प्रसादी का वितरण किया गया। इस दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु मंदिर पहुंचे और श्रद्धापूर्वक अन्नकूट प्रसाद ग्रहण कर धर्मलाभ प्राप्त किया। प्रसाद वितरण के दौरान मंदिर परिसर और आसपास के क्षेत्र में भक्तिमय वातावरण देखने को मिला। नया मंदिर परिवार के सदस्यों ने पूरे उत्साह और सेवा भाव के साथ श्रद्धालुओं को प्रसादी वितरित की। प्रसाद ग्रहण करने के लिए पहुंचे श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह दिखाई दिया। इस अवसर पर ज्ञान सिंघल, गोविंद सिंघल, गणेश सिंघल, गोपाल सिंघल, सुनील सिंघल, कमलेश सिंघल, घनश्याम सिंघल, वेद सिंघल, आनंद सिंघल, अशोक सिंघल, संतोष सिंघल, राजू सिंघल और सारांश सिंघल सहित परिवार के अनेक सदस्य उपस्थित रहे। **ब्यूरो चीफ : रोहित जैन**

ब्लैक क्रिस्टल में साकार रामलला की प्रतिमा ने मोहा मन, उपमुख्यमंत्री ने सराहा हुसैन परिवार का शिल्प

डॉ. वकार हुसैन को दिलाई भाजपा की आजीवन सदस्यता, पुत्र अमन की गणेश प्रतिमा भी बनी आकर्षण

उदयपुर. शाबाश इंडिया



मेवाड़ की शिल्प परंपरा को क्रिस्टल ग्लास कला के माध्यम से नई पहचान दिलाने वाले अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कलाकार डॉ. वकार हुसैन ने अपने पुत्र अमन हुसैन के साथ राजस्थान की उपमुख्यमंत्री श्रीमती दीया कुमारी से शिष्टाचार भेंट की। यह भेंट कला, आस्था और राजस्थान की सांस्कृतिक गरिमा के सुंदर संगम के रूप में यादगार रही। मुलाकात के दौरान उपमुख्यमंत्री ने डॉ. हुसैन से क्रिस्टल ग्लास कला की बारीकियों, निर्माण प्रक्रिया, तकनीकी विशेषताओं तथा इस माध्यम से तैयार होने वाली विशिष्ट कलाकृतियों के बारे में विस्तार से जानकारी ली। उन्होंने इस कला में निहित धैर्य, सृजनात्मकता और सूक्ष्म शिल्पकौशल की सराहना की। डॉ. वकार हुसैन ने ब्लैक क्रिस्टल से निर्मित भगवान श्रीरामलला की भव्य प्रतिमा उपमुख्यमंत्री को भेंट की। प्रतिमा की भावपूर्ण अभिव्यक्ति, आकर्षक बनावट और बारीक कारीगरी ने विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया। वहीं उनके पुत्र अमन हुसैन ने अपने हाथों से तैयार भगवान श्रीगणेश की कलात्मक प्रतिमा भेंट कर नई पीढ़ी की रचनात्मक प्रतिभा का प्रभावशाली परिचय दिया। दोनों पिता-पुत्र की कलाकृतियों का अवलोकन कर श्रीमती दीया कुमारी ने उनकी कला और सृजनशीलता की प्रशंसा की। उन्होंने उन्हें अपनी प्रतिभा के माध्यम से राजस्थान का नाम राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित करने के लिए शुभकामनाएं और आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री द्वारा डॉ. वकार हुसैन को भारतीय जनता पार्टी की आजीवन सदस्यता भी ग्रहण कराई गई। डॉ. हुसैन ने आत्मीय सम्मान के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे क्रिस्टल शिल्पकला के माध्यम से राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान को देश-दुनिया तक पहुंचाने लिए निरंतर समर्पित रहेंगे।

रिपोर्टः राकेश शर्मा 'राजदीप'

जन्मतिथि के अंकों वाला नोट बना यादगार उपहार, एसपी डॉ. अमृता दुहन बोलीं—"यह विचित्र उपहार है"

उदयपुर. शाबाश इंडिया। जन्मदिन पर फूल, संदेश और शुभकामनाएं तो बहुत मिलती हैं, लेकिन जब जन्मतिथि स्वयं एक नोट के क्रमांक में मुस्कराती दिखाई दे, तो वह क्षण हमेशा के लिए यादगार बन जाता है। उदयपुर जिला पुलिस अधीक्षक डॉ. अमृता दुहन के साथ ऐसा ही रोचक संयोग बना। विशिष्ट क्रमांक वाले नोटों के संग्रह के कारण शहर में ''करेंसी मैन'' के नाम से चर्चित डॉ. विनय भाणावत, एसपी डॉ. दुहन के निवास पर जन्मदिन की बधाई देने पहुंचे। उन्होंने उन्हें ऐसा विशेष नोट भेंट किया, जिस पर अंकित क्रमांक 111183 उनकी जन्मतिथि 11 नवंबर 1983 की अंक-श्रृंखला से मेल खाता है। नोट को देखते ही डॉ. दुहन चकित रह गईं। मुस्कराते हुए उन्होंने इस अनूठी भेंट को ''विचित्र उपहार'' बताया। उपस्थितजनों के लिए भी यह अंक-संयोग कौतूहल और चर्चा का विषय बन गया। क्रमांक में पहले दो अंक दिन, अगले दो माह तथा अंतिम दो अंक जन्म-वर्ष के अंतिम अंकों का संकेत दे रहे थे। डॉ. भाणावत ने बताया कि वे वर्षों से विशेष क्रमांक वाले नोटों का संग्रह करते हैं। जन्मदिन, विवाह-वर्षगांठ अथवा जीवन के अन्य महत्वपूर्ण अवसरों से संबंधित अंकों वाले नोट खोजकर उन्हें स्मृति-उपहार के रूप में भेंट करना उनकी विशिष्ट रुचि है। उनके अनुसार ऐसे नोट केवल मुद्रा नहीं रहते, बल्कि व्यक्ति के जीवन से जुड़ी निजी कहानी और सहेजने योग्य याद बन जाते हैं। इस अवसर पर डॉ. भाणावत ने एसपी डॉ. अमृता दुहन के उत्तम स्वास्थ्य, सफल कार्यकाल और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। अंक-संयोग से सजा यह



उपहार जन्मदिन की शुभकामना को एक भावपूर्ण स्मृति में बदल गया।

रिपोर्टः
राकेश शर्मा 'राजदीप'